THE QUEEN EMPRESS OF INDIA AND HER FAMILY.

विक्टोरिया महारानी का वृत्तान्त ।



PUBLISHED BY THE CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY, ALLAHABAD.

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS :—1896.

1st *Edition* 3,000.] *Price* 3 *annas.* [दाम तीन आना।



Victoria R.I.

THE QUEEN EMPRESS OF INDIA AND HER FAMILY.

विक्टोरिया महारानी का वृत्तान्त ।



PUBLISHED BY THE CHRISTIAN LITERATURE
SOCIETY, ALLAHABAD.

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1st *Edition.*] 1896. [3,000 *Copies.*

विक्टोरिया महारानी का वृत्तान्त

जिस में महारानी और उस के घराने का वर्णन और उस के सुभाग्य राज्य के कारण से हिन्दुस्तान की उन्नति की चर्चा मिलती है।



डयूक आफ केन्ट विक्टोरिया का पिता।

समस्त देशों में यह बात उचित है कि प्रजा अपने राजा के गुण

और स्वभाव और कर्म्म को जानें और कि राजा प्रजा के गुण औगुण और दशा और सुख दुःख जानें और यदि एक की दूसरे के साथ जान पहिचान न हो तो राज्य का कार्य्य भली भांति न चलेगा । यह अच्छी बात है कि प्रजा अपने राजा को प्यार करे परन्तु जिस के विषय कुछ नहीं जानते हैं उन की प्रीति कैसे उपजे । सत्य है कि हिन्दुस्तान की महारानी यहां से ७000 मील दूर रहती है और हिन्दबासी अपनी आंखों से उसे देख नहीं सक्ते हैं परन्तु वे उस का बृत्तान्त पुस्तकों में पढ़ सक्ते हैं और चित्रों में उस का रूप देख सक्ते हैं । महारानी ने आप दो एक पुस्तकें छपवाईं जिन से उस के घर का अच्छा बृत्तान्त मिलता है । यदि कोई चाहे कि विक्टोरिया के लम्बे चौड़े सुख राज्य का पूरा २ समाचार लिखे तो बहुत सी लम्बी चौड़ी पुस्तकें बन जायेंगी । इस छोटी सी पोथी का अर्थ और है । हम केवल महारानी के गुण स्वभाव और उस के घराने और बालकों का बर्णन किया चाहते हैं और इस की कुछ चर्चा करनी है कि उस के राज्य में कौन कौन विशेष काम किये गये और उस के समय में हिन्दुस्तान की कैसी भलाई और बढ़ती हुई ।

महारानी का बचपन ।

विक्टोरिया महाराजाओं के बड़े २ बंश में उत्पन्न हुई । उस का पिता अल्फ्रेड महाराजा के बंश से था जो हजार बर्ष बीते होंगे कि जीता था । उस की माता के दादे परदादे नौ सौ बर्ष से जर्मन देश में राजा थे । विक्टोरिया का दादा जार्ज तीसरा था जो सन् १७६0 में गद्दी पर बैठा और सन् १८२0 में मर गया । तब उस का बड़ा बेटा जार्ज चौथा गद्दी पर बैठा । जार्ज तीसरे का दूसरा बेटा जो ड्यूक



विक्टोरिया की माता ।

आफ यार्क कहलाता था भाई के राज्य में मर गया सो जब जार्ज चैाथा सन ईसवी १८३० में मरा तब उस का भाई विलियम चैाथा जो जार्ज तीसरे का तीसरा बेटा था महाराजा हो गया ।

परन्तु जान्ना चाहिये कि जार्ज तीसरे का चैाथा बेटा जो इडवर्ड ड्यूक आफ केन्ट नाम से प्रसिद्ध था अपने सब भाइयों से अच्छा और आदरयोग्य था । सन् १८१८ में उस ने जर्मन देश के राजा लैनिनगिन की बिधवा से बिवाह किया और वे इङ्गलिस्तान के केनसिंगटन नाम राजभवन में रहने लगे । उन की एकलैाती पुत्री उस भवन में जो



बचपन में विक्टोरिया का चित्र ।

लंडन नगर में है सन् ईसवी १८१९ में मई महीने की २४ तारीख को

उत्पन्न हुई और वह अपनी माता के नाम से विक्टोरिया कहलाई । यह वह लड़की है जो पीछे हिन्दुस्तान इङ्गलिस्तान कानेडा आस्ट्रेलिया आदि की महारानी हुई । इस बर्णन से जाना जाता है कि उस की माता पहिले बिधवा थी । यह उन हिन्दुस्तान के सुधारनेहारों के लिये दिलासे की बात है जो बेचारी हिन्द की बिधवा स्त्रियों पर दया करते और चाहते हैं कि उन को इस दुर्दशा से छुटकारा मिले ।

उस के पिता का मरना ।

जब विक्टोरिया छः मास की अवस्था में थी तब हवा खाने के लिये वह सिदमौथ नगर में समुद्र तीर पर पहुंचाई गई और वहां सन् १८२० में उस का प्राण बहुत ही बच गया । एक लड़का कहीं समीप हाथ में बंदूक लेके पक्षियों का शिकार करता था । अकस्मात उस ने अपनी बंदूक को उस घर की ओर जिस में राजकुमारी रहती थी छोड़ा बरन छर्रे उस कोठरी में आये जहां लड़की उस समय आया की गोद में बैठी थी और उस के सिर के समीप भीत में जा लगे ।

उस के थोड़े दिन पीछे उस का पिता मर गया । उस के मरने का ऐसा वृत्तान्त है कि ड्यूक आफ केन्ट अपनी पुत्री को बहुत ही प्यार करता था । उसे और लोगों को दिखाकर वह बड़ी मगनता से कहा करता था कि भली भांति इस बच्चे को देखो । किसी दिन यह देश की महारानी होगी । एक दिन वह हवा खाने को पैदल चला और चलते २ अकस्मात उस की जूतियां बहुत भीग गई थीं । जब वह घर पर लौट आया तब उस ने छोटी बेटी को देखा और कुछ देर लों भीगे जूतों को बिना उतारे वहां बैठके बच्चे के संग खेलता रहा । इस

से उसे जाड़ा लगा और वह रोगी हुआ और सन् १८२० की २३ जनवरी को मर गया ।

डचेज आफ केन्ट जो उस की माता थी उस समय इङ्गलिस्तान में नई आई थी और अंग्रेजी भाषा न बोल सकती थी तौभी उस ने जाना कि बेटी के कारण से इङ्गलिस्तान में रहना भला है। उस का भाई प्रिंस लिओपोल्ड उस बिधवा और राजकुमारी को अपने घर ले गया और शक्ति भर उन को दुःख में दिलासा दिया । बिधवा ४१ बर्ष लों केनसिंगटन राजभवन में बनी रही और उस के मन में एक ही बड़ी इच्छा थी अर्थात् यह कि राजकुमारी को ऐसा पाले पोषे कि वह सब बातों में अच्छी और स्तुतियोग्य होवे ।

तीन वर्ष की अवस्था में विक्टोरिया का प्राण फिर बहुत बचा। घोड़ों के भड़कने से वह एक गाड़ी से गिर पड़ी बरन गाड़ी की पहिया उस की देह के ऊपर चला चाहती थी कि इतने में एक सिपाही ने उस जोखिम को देखकर बालक के कपड़े पकड़के उसे एक ओर खींच लिया और यों वह बच गई ।

हिन्दुस्तान के बहुत महाशय लोग अपने बालकों के पालने में बार २ बड़ी निश्चिन्तता और अज्ञानता दिखाते हैं। बालक बहुत करके दुष्ट सेवकों के संग दिन भर खेला करते और उन की बोलचाल देख सुनके बहुत कुबचन और बुरे दस्तूर सीख लेते हैं। फिर जब जी चाहे बालक मिठाई आदि अनुचित खाने की वस्तु खाते हैं जिन से देह की हानि होती है। विक्टोरिया का पोषण और प्रकार का था।

गर्मी के दिनों में माता का दस्तूर था कि इस रीति से दिन बितावे। आठ बजे सबेरे को वह हाजरी खाती थी और राजकुमारी के लिये एक छोटी मेज पास लगाई जाती थी जिस पर दूध रोटी और फल सजाये जाते थे। तिस के पीछे वह गाड़ी में सवार होके

अथवा पैदल चलके एक घंटे लों हवा खाने के लिये बाहर निकला करती थी । जब लड़की कुछ बड़ी हुई तब दस बजे से बारह बजे लों अपने पाठों को सीखती थी तब अपने खिलौनों के संग खेला करती वा घर की कोठरियों में इधर उधर दौड़ती फिरती थी । दो बजे लड़की फिर भोजन खाती और तब चार बजे लों अपने पाठों को सीखती थी तब गाड़ी में माता के संग सवार होके कहीं जाती थी । सांझ के भोजन खाने के पीछे वह अपने खिलौनों से फिर खेलती और नौ बजे सुलाई जाती थी और रात को उस की चारपाई माता के पलंग पास बिछाई जाती थी ।

एक कार्य्य जिस से लड़की बहुत प्रसन्न रहती यह था कि पानी की बालटी को लेकर वाटिका में फिरा करती और फूलों को सींचती थी ।

इङ्गलिस्तान में वह कुरीति नहीं है जो हिन्द देश में प्रचलित है कि कुलीन स्त्रियां घरों में बंद रहतीं बरन वहां कुलीन स्त्रियां भी जनानखाने से बाहर निकलतीं और इधर उधर फिर सक्ती हैं । इस से कितनी लाभ की बातें प्राप्त होती हैं । एक यह है कि उन का ज्ञान बहुत बढ़ जाता है । दूसरा यह है कि अधिक हवा खाने से वे अधिक भली चंगी रहती हैं । तीसरा यह है कि उन के बालबच्चे बलवान हो जाते और उन में से कम मरते हैं । पूर्वकाल में हिन्दुओं की स्त्रियों का यह दस्तूर था परन्तु महम्मदियों के आने से उन्हों ने परदे की कुरीति सीखी । और अंगरेजी लड़कियों के समान विक्टोरिया बाहर निकलती और इधर उधर फिरा करती और जो कोई उसे सलाम करता वह फिर उन को सलाम करती थी । इस सादा भोजन खाने और समय पर सोने और बाहर फिरा करने से वह भली चंगी रहती थी ।

राजकुमारी का शिक्षा पाना ।

बहुत लोग यह सोचते हैं कि शिक्षा पाना यही है जब हम बहुत पुस्तकों को पढ़ें और कितनी विद्याओं को जानें परन्तु ऐसे लोग देखने में आते हैं जो बड़े २ बी. ए. और एम. ए. होते हैं तौभी घमंडी और झूठे और असभ्य हैं। क्या कोई कहेगा कि ऐसों की अच्छी शिक्षा हुई। कभी नहीं। राजकुमारी की माता की बड़ी इच्छा यही थी कि मेरी पुत्री के सारे बोलचाल और रीति व्यवहार भले और सीधे और धर्म्मी होवें। लड़की की शिक्षक भी जो एक कुलीन स्त्री थी इस चिन्ता में रहती थी। एक पादरी साहिब डेविस नाम जो पीछे पीटरबोरो का लार्ड्पादरी बना उस को पढ़ाता था। धर्म्म की और इतिहास की बातों और अंगरेजी और लाटीनी आदि भाषाओं को उसे सिखाता था। जब वह बड़ी हुई तब उस के और भी शिक्षक हुए।

बहुत और लड़कियों के समान विक्टोरिया कभी २ परिश्रम करने से थक जाती और अपनी पुस्तकों को अलग करने चाहती थी और यह पूछने लगती थी कि इस से क्या लाभ है और उस को मैं क्यों सीखूं। परन्तु धीरे २ वह सीखने लगी कि परिश्रमी होना अवश्य है। उस को यह भी शिक्षा मिलती थी कि जब तुम किसी काम को चाहे कार्य्य हो वा खेल हो आरम्भ करती हो तो उसे पूरा करो और अधूड़ा मत छोड़ो।

माता की विशेष इच्छा यह थी कि मेरी पुत्री सदा सत्य बोला करे और नीचे के वृत्तान्त से जाना जाता है कि विक्टोरिया इस भारी शिक्षा को तन मन से ग्रहण करती थी। एक दिन लड़की अपने पाठ पर मन न लगाती थी और इस लिये समझाई गई। फिर शिक्षक की किसी बात के न मानने से समझाई गई। सो जब माता उस कमरे में आकर पूछने लगी कि क्या राजकुमारी का चाल चलन ठीक है तब शिक्षक

ने उत्तर दिया कि एक बार आज उस ने कुछ क्लेश दिया है। तब विक्टोरिया बोल उठी कि नहीं शिक्षक जी क्या आप स्मरण नहीं करती हैं कि मैं ने दो बार दुःख दिया है।

फिर यही उपदेश उसे दिया जाता था कि किसी रीति से ऋणी न हो जाना। तीन तीन महीने में उसे कुछ रुपये दिये जाते थे और इन को अपनी इच्छानुसार व्यय करती थी। परन्तु एक दिन जब वह आठ बर्ष की अवस्था की थी तब वह इस इच्छा से किसी दूकान में शिक्षक के संग चली गई कि कितने मित्रों को देने के लिये कितनी बस्तुन को मोल लेवे। उस ने जो कुछ पास था सब व्यय किया और पीछे उस ने किसी और बस्तु को जिस का दाम डेढ़ रुपया था देखा और कहा कि अच्छा यह बस्तु अमुक मित्र को देने के लिये कैसी ठीक होती यदि कुछ रुपये होते। दूकानवाले ने कहा कि इस को भी मैं लपेटके आप को दूंगा पैसे की कुछ चिन्ता नहीं। सिखलानेवाली बोली कि नहीं। राजकुमारी के पास अब पैसे नहीं रहे और वह बिन पैसे के कोई बस्तु नहीं ले सक्ती है। दूकानवाले ने कहा भला एक उपाय यह है कि मैं अब इस बस्तु को लपेटके यहां रक्खूंगा और जब फिर राजकुमारी के हाथ में रुपये हों तब ही इस को मंगवा सक्ती है। योंही किया गया।

राजकुमारी को इस बात का संदेश दिया न जाता था कि कदाचित् कोई दिन तुम सिंहासन पर बैठोगी ऐसा न हो कि इस बड़े पद पर बिचार करते २ उस के मन में अहंकार उपजे। पर जब उस का बारहवां जन्मदिन हुआ तब माता ने सोचा कि अब उस को इस बात के विषय में चिताना उचित है। सो शिक्षक ने इङ्गलिस्तान के महाराजाओं की बंशावली लिखकर उसे उस पुस्तक में रक्खा जिस को लड़की पढ़ा करती थी। जब पुस्तक खोली तब वह बोली कि यह कागज़



विक्टोरिया को अपने पद का ज्ञान पाना ।

कैसा है मैंने पहिले उस को नहीं देखा। सिखलानेवाली ने उत्तर दिया कि माता की इच्छा न थी कि तुम पहिले उसे देखो पर अब समय पहुंचा है। लड़की सब नाम पढ़के बोली मैं यह न जानती थी कि मैं अब गद्दी पर बैठने के समीप हूं। कुछ ध्यान करके उस ने फिर कहा कि ऐसी दशा में बहुत लड़कियां मन में फूलतीं इस लिये कि वे नहीं जानतीं कि राज्य का काम कैसा कठिन काम है। ऐश्वर्य और धूमधाम तो है परन्तु उस के संग कैसा बड़ा भार उठाना पड़ता है। तब उस ने शिक्षा देनेहारी से हाथ मिलाकर कहा कि मैं जरूर अच्छी लड़की बनूंगी क्योंकि अब जानती हूं कि आप मेरे पाठ सिखाने के विषय में इतनी चिन्ता करती थीं।

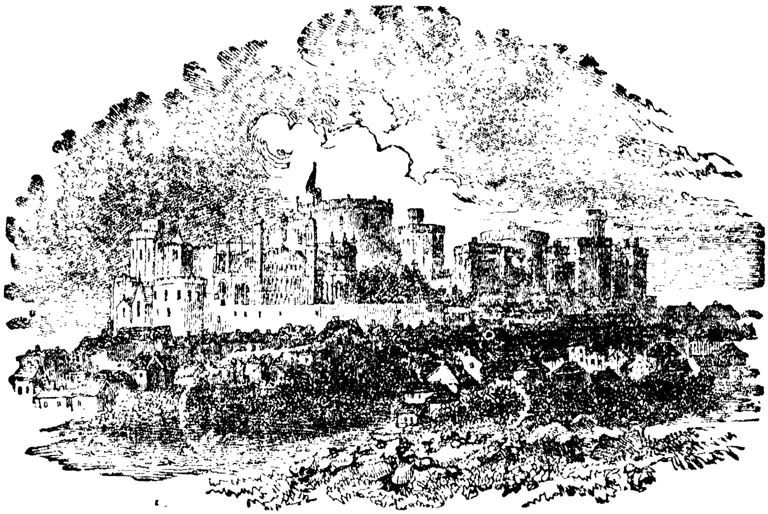
सन् १८३३ ईसवी में जब विक्टोरिया अपनी चैादहवीं बरस की अवस्था में थी तब उस ने जहाज में सवार होकर दक्षिण इङ्गलिस्तान के कितने नगरों को देखा और वाइट नाम टापू में कितने मास लों रही। एक दिन जब वह जहाज में थी तब उस का प्राण फिर बहुत बचा। अकस्मात एक आंधी शीघ्र ही उठी और एक मस्तूल टूटने लगा। उस का शब्द सुनकर मांझी ने देखा कि राजकुमारी मस्तूल के नीचे खड़ी तमाशा देख रही है सो झट वहां लपकके उस ने उस को वहां से खींच लिया और तब मस्तूल वहां गिरा जहां से कि लड़की खींची गई थी। इस काम के करने से मांझी की उन्नति हुई और उस के मरने पर उस की बिधवा और बालक को वृत्ति दिई गई।

राजकुमारी ऐसी अच्छी रीति से पढ़ाई गई कि लोग उस के पढ़ाने-हारों की बड़ी प्रशंसा करते थे। वह यूरप की कितनी भाषाओं को भली भांति बोल सक्ती है। लाटीनी में उस ने कितनी पुस्तकें पढ़ीं और रेखागणित बीजगणित आदि को जानती है। वह अपने देश के इतिहास और उस की व्यवस्थाओं और उस की विशेष पुस्तकों के

विषय में बहुत कुछ पढ़ सक्ती है । वह कई विद्याओं में निपुण है जैसे गाना चित्र खींचना सिलाई करना बूटेकारी इत्यादि । निदान वह उन बातों को सीखती जाती थी जो पीछे राज्य करने में अधिक काम आवें ।

डचेज़ आफ केन्ट ने अपनी प्यारी पुत्री को यही अच्छा उपदेश दिया कि इङ्गलिस्तान के लोग तुम को नहीं बरन उस बड़े पद और मर्य्यादा को जो तुम को होनेवाला है सोचा करते हैं सो ऐसी चाल चलना उचित है कि जिस से उस पद का कुछ भी अपमान न किया जाय । मैं इस बात की बड़ी चिन्ता करती हूं कि तुम को ऐसा पालूं जिस्तें तुम अच्छी और सीधी स्त्री बनो तब अच्छी और सीधी महारानी भी हो जाओगी ।

विक्टोरिया का सिंहासन पर बैठना ।



विनसर राजभवन ।

जब राजकुमारी अपनी अठारहवीं बरस की अवस्था में थी तब बीसवीं

जून को सन् १८३७ ईसवी में इङ्गलिस्तान का महाराजा विलियम चौथा विन्सर राजभवन में आधी रात को मर गया। तब तीन बड़े मंत्री जो वहां हाजिर थे झट गाड़ी में सवार हुए और विन्सर गढ़ से सिधारे कि विक्टोरिया को इस बात का संदेश देवें। वे पांच बजे सवेरे केनसिंगटन भवन में आ पहुंचे और वहां के सब लोगों को सोते पाया। उन्हों ने बड़े जोर से दर्वाजे पर खटखटाया और घंटा बजाया। अंत को डेवढ़ीदार ने आकर उन के लिये फाटक खोल दिया। तब उन को फिर आंगन में ठहरना पड़ा। फिर जब घंटा बजाया गया और एक सहेली आई और वे बोले कि जाके राजकुमारी से कहो कि हम उस से भेंट करना चाहते हैं क्योंकि उस से एक जरूरी बात कहने आये हैं। सहेली फिर आके कहने लगी कि राजकुमारी अब ऐसी मीठी नींद में है कि मैं उसे कैसे जगाऊं। यह सुनकर मंत्रियों ने कहा कि हम राज्य के कार्य्य के लिये महारानी के पास आये हैं ऐसी बात के साम्हने मीठी नींद क्या पदार्थ है।

महारानी शब्द सुनकर सहेली तुरन्त चली गई और शीघ्र राजकुमारी कमरे में आई और उन्हों ने देखा कि बिना कपड़े बदलने वा बिना सिंगार करने के वह झट आई है क्योंकि रात का कपड़ा पहिने हुए और बाल कांधों पर छिटकाये और आंखों में आंसू भरे हुए आई है।

जब मंत्री लोगों ने संदेश दिया कि महाराजा आज मरा और अब आप हमारी महारानी हैं तब विक्टोरिया उस की ओर फिरके जो लार्ड पादरी था बोली कि मेरी बिन्ती आप से यह है कि आप मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना करें। तब चारों ने घुटने टेकके प्रार्थना किई और यह आश्चर्य्य की बात नहीं है कि ईश्वर की आशीष इस राज्य पर बनी रहे जिस की नेव प्रार्थना के संग डाली गई। जब कोई सोचता

है कि हमें कोई भारी और कठिन कार्य्य करना है तो ऐसे समय में ईश्वर से प्रार्थना करना और सहायता मांगना बहुत ही उचित है । तब विक्टोरिया बैठकर महाराजा की बिधवा को बड़े प्रेम से दिलासा की चिट्ठी लिखने लगी और उस के नाम को लिफाफे पर महारानी करके लिखा तब किसी ने इस को देखकर कहा कि अब वह महारानी नहीं है । विक्टोरिया ने बड़ी कोमलता से उत्तर दिया कि मैं जानती हूं परन्तु मैं उसे इस बात का स्मरण कैसे दिलाऊं ।

तब वह कपड़े बदलने और अपनी प्यारी माता के संग इन सब बातों का परामर्श लेने को गई और पीछे बोली कि मैं जाकर इन भारी बातों पर एकान्त में बिचार करूंगी । परन्तु उसे किसी बात के विषय बिचार करने का अवसर न मिला क्योंकि नौ बजे दिन को लार्ड मेलबर्न जो राज्य कार्य्य में उस का विशेष सचिव था उस पास आया और बोला कि दो घंटे पीछे सब मंत्रियों की सभा एकट्ठी होगी और आप को उस सभा में बैठना होगा । मैं कुछ लिखूंगा सो आप उसे लेके पढ़ियेगा । सो विक्टोरिया बड़ी कोमलता और साहस से अपनी पहिली राज्यसभा में आके बैठी और मंत्री के हाथ से कागज़ लेके यों पढ़ती थी कि एक भरोसे से मेरा मन अब स्थिर है नहीं तो राज्य-कार्य्य के भारी काम के नीचे दबाई जाती । भरोसा यह है कि जिस ईश्वर ने मुझे इस काम के लिये बुलाया है वह उस के करने में मुझ को संभालेगा । तब सभा के सब लोगों ने बड़े से छोटे लों उस पास आकर और उस के हाथ को चूमकर बचन दिया कि हम तन मन धन से आप के कार्य्य की रक्षा करेंगे । जब वे चले तो आपस में विक्टोरिया के बोलचाल की उत्तमता की प्रशंसा करने लगे । यदि कोई पूछे कि उस समय उस का रूप कैसा था तो जान लो कि दिल में छोटी और देह में पतली और उस के बाल भूरे और उस की आखें कंजी थीं ।



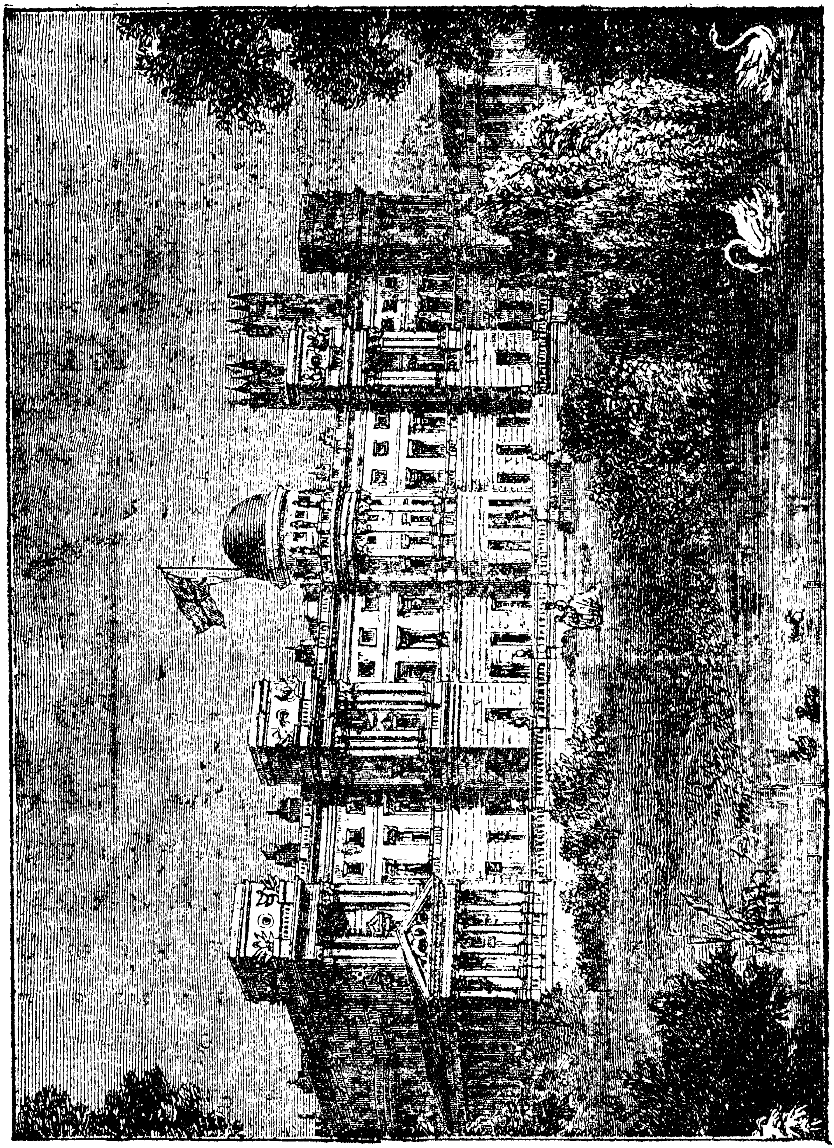
विक्टोरिया की पहिली राजसभा ।

चाल और ज्ञान और प्रताप में वह महारानी देख पड़ती थी परन्तु सत्य पूछो तो केवल अठारह बरस की लड़की थी ।

विक्टोरिया के अधिकार का प्रकाश ।

दूसरे दिन उस के अधिकार का ढिंढोरा पीटा गया । वह अपनी माता के संग दस्तूर के अनुसार दूसरे भवन में गई और वहां वे देश के बड़े २ मंत्रियों के संग जो सुंदर २ राजबस्त्र पहिने हुए थे एक खिड़की में खड़ी हुई जहां बाहर के लोग उन्हें भली भांति देख सकें। तब बाहर सड़क में राजदूत और तुरहीवाले बड़े जोर से उस के नाम को सुनाते थे कि अलिक्ज़ेन्ड्रीना विक्टोरिया इङ्गलिस्तान हिन्दुस्तान आदि की महारानी हैं । उन्हीं को हम मानेंगे और पूरे बिश्वास से उन की आज्ञाओं पर चलेंगे और उस सृजनहार से जिस की सामर्थ्य से सब राजा लोग राज्य करते हैं बिनती करते हैं कि उस का अनुग्रह सदा लों महारानी अलिक्ज़ेन्ड्रीना विक्टोरिया पर होवे जिस्तें वह बहुत बरस लों बड़े सुख चैन और ऐश्वर्य्य से राज्य करे और महारानी हो जाय । तब बाहर की बड़ी भीड़ें जय २ पुकारने लगीं और बाजे बजते और तोपें छोड़ी जाती थीं। यह तमाशा देख और हुल्लड़ सुन महारानी का मन भर आया और अपनी माता के गले लिपटकर फूट २ कर रोने लगी ।

उस के बीस एक दिन पीछे महारानी केनसिंगटन को छोड़के बकिङ्गहाम राजभवन में जाके रहने लगी। यह वह राजभवन था जिस में महाराजा लोग जब लंडन नगर में आते बहुधा निवास किया करते थे। वे सब लोग जो केनसिंगटन के पुराने भवन के समीप रहते थे उन के चले जाने से शोक करते थे क्योंकि माता बेटी उन सभों पर कृपा



बकिङ्हाम राजभवन ।

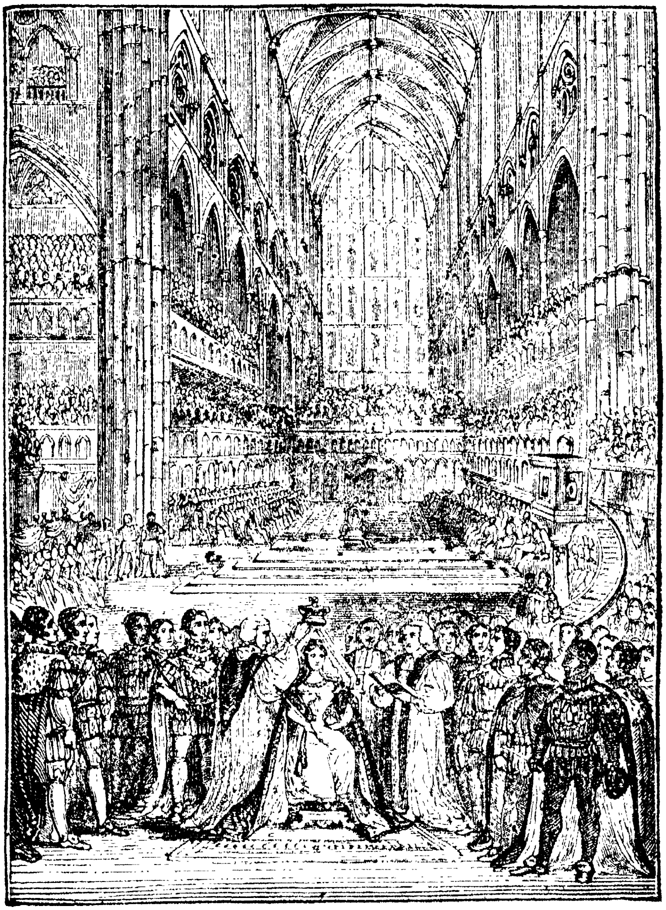
करती थीं और वे उन्हें बहुत प्यार करते थे। एक छोटे घर में उस के पिता का एक पुराना सेवक केनसिंगटन के समीप अपने एक पुत्र और एक पुत्री सहित रहता था। दोनों बालक रोगी हुए। कितने बरस पीछे लड़का मर गया और लड़की रोगी पड़ी रही। विक्टोरिया और उस की माता बार २ उस के पास जाकर धर्म्मपुस्तक को पढ़के उस को सुनाती थीं। एक दिन किसी पादरी साहब ने उस घर में जाकर पुत्री को बहुत आनन्दित पाया। जब उस ने इस आनन्द का कारण पूछा तब लड़की ने उसे एक दाऊद के गीत की पुस्तक दिखलाई और कहा देखो कि महारानी ने आज अपनी एक सहेली के हाथों से इस को भेजा और कहा कि महारानी हो जाने से मैं केनसिंगटन को छोड़ती हूं तौभी मैं तुम को स्मरण करूंगी। पुस्तक के भीतर पुस्तक में रखने का एक निशान भी था जिसे महारानी ने अपने हाथों से बनाया था।

विक्टोरिया के सिर पर मुकुट का रखा जाना।

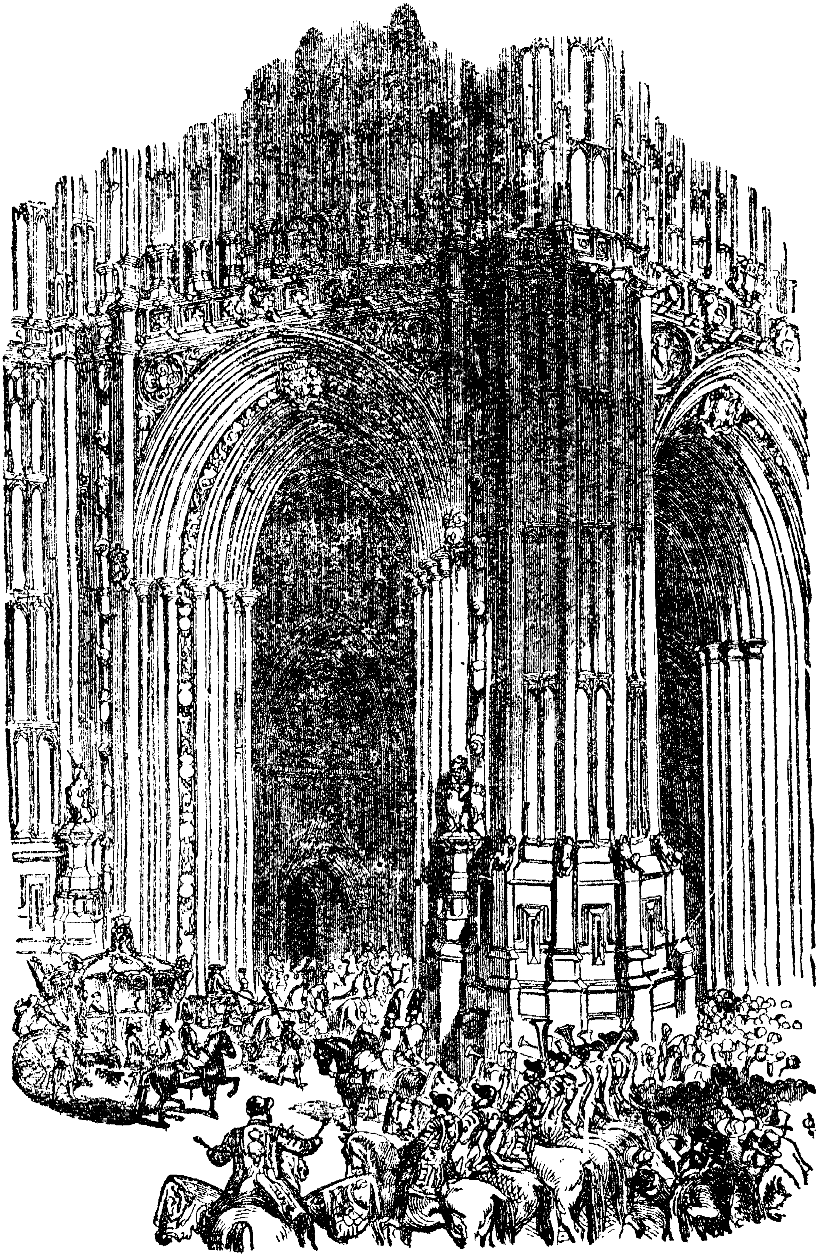
विलियम चौथे के मरने से विक्टोरिया देश पर अधिकार रखती थी तौभी मुकुट के पहिनाने में एक बरस की देरी हुई। एक कारण इस का यह था कि पुराना मुकुट जिसे महाराजा लोग आगे पहिनते थे विक्टोरिया के सिर के लिये बहुत बड़ा था और उस का बोझ भी बहुत भारी था सो नया मुकुट बनाना पड़ा। यह भी बहुत सुंदर बना। और उस में २१६६ बहुमूल्य रत्न जड़े थे और उस की लागत ११३0000 रुपये थी। सो छः महीने पहिले से उस बड़े दिन के लिये नाना प्रकार की तैयारियां हो रही थीं।

वह दिन सन् ईसवी १८३८ के २८ जून को हुआ और बड़े सवेरे से

गाड़ियां वेस्टमिनिस्टर आबी की ओर जो इङ्गलिस्तान के प्राचीन और सुंदर और बड़े गिरजा घरों में प्रसिद्ध है चलने लगीं । दस बजे को २१ तोपें छोड़ी गईं और इस चिन्ह के अनुसार महारानी और उस के अगणित साथी बकिङ्गहाम भवन से सिधारे । वह बहुत ही उत्तम गाड़ी

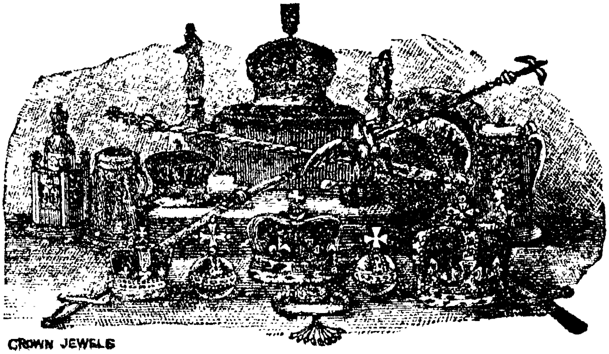


विक्टोरिया के शिर पर मुकुट का रखा जाना ।



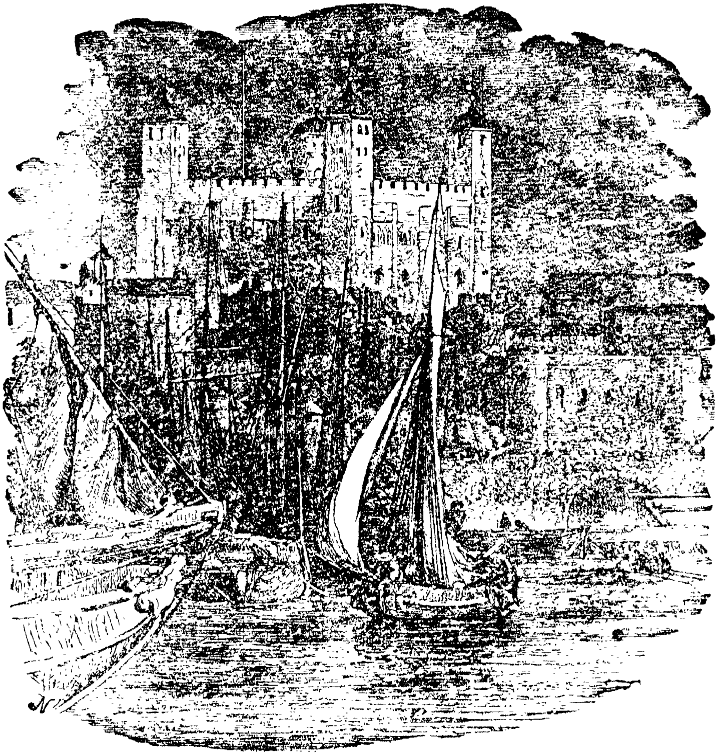
वेस्टमिनिस्टर आबी गिरजे का द्वार ।

में सवार थी जिस में आठ घोड़े जुते थे। सड़कों में हर कहीं भीड़ें लगी हुईं जय जय करके पुकारती थीं। बड़े गिरजे के भीतर हजारों प्रधान और महाशय और कुलीन जन एकट्ठे हुए।



राजमुकुट और गहने।

पहिले एक गीत गाया गया। इतने में महारानी घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी। तब बड़े लार्ड पादरी ने उस के हाथ को पकड़के गिरजे के चारों कोनों की ओर घुमाके उसे भली भांति सब लोगों को दिखला दिया और कहा कि हे साहबो यह जिसे आप लोगों के साम्हने में लाता हूं सो बिना संदेह के इङ्गलिस्तान की महारानी है। क्या आप लोग इस के अधिकार मानने का शपथ करते हो। चारों कोनों से यह बड़ा शब्द आता था कि महारानी विक्टोरिया जीती रहे। तब तुरहीवाले लोग लाल वस्त्र पहिने हुए साम्हने आये और तुरही फूंकते और ढोलिये ढोलों को बजाते थे। तब प्रार्थना सहित कुछ उपदेश सुनाया गया तिस के पीछे एक बड़ी धर्म्मपुस्तक लाई गई और महारानी ने उस पर हाथ रखकर शपथ किई कि जो कार्य्य महारानी को उचित हों उन्हीं को करती रहूंगी और राज्य की व्यवस्था और धर्म्म दोनों को पाला करूंगी।



बुर्ज जिस में राजमुकुट रहता है ।

बीच में एक बहुत प्राचीन बड़ी चौकी रक्खी थी जिस पर विक्टोरिया से पहिले ३३ महाराजा और ३ महारानी मुकुट के पहिनाने के दिन पर बैठ चुके थे बरन लोग देखते थे कि चौकी के नीचे एक बड़ा पत्थर सम्भाला हुआ है । कहते हैं कि प्राचीनकाल में स्काटलेण्ड देश के महाराजा लोगों को सैकड़ों बरस से इस पत्थर पर बैठाके मुकुट पहिनाया जाता था । तब सोने का एक पर्दा महारानी के सिर के ऊपर फैलाया गया और तब तेल का तिलक दस्तूर के अनुसार उस के माथे और हाथों पर लगाया गया तब बड़े लार्ड पादरी ने इङ्गलिस्तान के मुकुट को उस के सिर पर रख दिया तब वह मुकुट पहिने

हुए जाके दूसरी चौकी पर जो सत्कार की चौकी नाम से प्रसिद्ध है बैठी और सब राजा और प्रधान और कुलीन जन जो वहां थे सब एक एक करके उस पास आये और उन्हों ने उस के आगे घुटने टेकके और महारानी के मुकुट को छूकर बचन दिया कि हम इस राज्य को मानेंगे और तन मन धन से उस की रक्षा करेंगे और जो राजा आदि मुकुट पहिने हुए थे अपने मुकुटों को उतारकर ऐसा ही बचन देने लगे ।

यों यह भारी कार्य्य समाप्त हुआ और महारानी अपनी गाड़ी में बैठकर घर की ओर बड़ी धूमधाम से लौट गई । उस के बस्त्र बैंगनी मखमल के बड़े सुंदर बने थे जिन के किनारों पर सच्चा सोनहरा गोटा लगा था । सिर पर मुकुट धरा था दहिने हाथ में सोने का राजदण्ड और बायें हाथ में सोने का मण्डल था और हर कहीं सड़कों में भीड़ें जय महारानी विक्टोरिया की पुकारती थीं । समस्त राज्य में उस दिन बड़ा आनन्द और तमाशा हुआ । लोग बड़े संभोजन बनाते और आतशबाज़ी छुड़ाते और घरों में रोशनी करते थे । बहुत कंगालों को भोजन खिलाया गया और एक बड़ी बाटिका में चार दिन लों बड़ा मेला होता रहा और महारानी आप उस मेले को देखने गईं ।

विक्टोरिया के बिवाह का वर्णन ।

जिस साल में कि विक्टोरिया का जन्म इङ्गलिस्तान में हुआ एक छोटा राजकुमार जर्मन देश में भी उत्पन्न हुआ । उस का नाम आलबर्ट था और वह पीछे इङ्गलिस्तान में बहुत प्रसिद्ध हुआ । उस के बचपन में बहुत लोग यह समझते थे कि जब वह बड़ा हो जायेगा तब विक्टोरिया के संग बिवाह होगा और जब उन्हों ने देखा कि वह कैसा सुंदर और ज्ञानी और धर्म्मी है तब उन्हों ने उस को इस बड़े ऊंचे पद के योग्य समझा ।



विक्टोरिया का विवाह।

जब वे दोनों सत्रह बरस के हुए तब आलबर्ट अपने बड़े भाई के

संग इङ्गलिस्तान को देखने गया और वहां वे दोनों राजकुमार बड़े चैन से एक महीना भर रहे परन्तु उस समय बिवाह की कुछ भी चर्चा न किई गई। उन में और विक्टोरिया में कुछ नातेदारी थी और उस समय से उन लोगों के बीच में चिट्ठियां आने जाने लगीं। जब विक्टोरिया महारानी हो गई तब आलबर्ट ने यह मंगलबादी की चिट्ठी लिखी

बोन्न, जर्मनी, जून २६वीं १८३७।

मेरी प्यारी मिचिन

मैं यह छोटी सी चिट्ठी आप के जय जयकार मनाने के लिये आप के पास भेजता हूं क्योंकि आप के जीवन में बड़ी मंगल की उन्नति हुई है।

अब यूरप के सब से बलवन्त देश का अधिकार आप के हाथ में आया और करोड़ों लोगों का सुख दुःख माने आप को सौंपा गया है। ईश्वर आप को सहायता देवे और आप के हाथों को इस भारी और कठिन काम के करने के लिये बलवान करे।

मेरी प्रार्थना यह है कि आप का राज्य बहुत बरस लों रहे और बड़ा सुभाग्य और तेजस्वी होवे और कि आप के समस्त परिश्रम का यह प्रतिफल मिले कि प्रजा तन मन से आप को प्यार करे।

मेरी बिन्ती यह है कि आप अपने नातेदारों को जो यहां बोन्न में रहते हैं स्मरण में रक्खें और जैसा उन पर हित करती रहीं सो करती रहिये। हम लोग आप को बहुत स्मरण करते हैं परन्तु अब और लिखकर इस समय आप को क्लेश न देंगे।

आप मानिये कि मैं सदा आप का दास हूं

आलबर्ट।

जब महारानी सिंहासन पर बैठाई गई तब लोग सोचने लगे कि यदि वह अब बिवाह करती तो बहुत उचित बात होती परन्तु उस

की ऐसी इच्छा न थी । तब लिओपोल्ड ने जो बेलजिअम देश का महाराजा था और उस का चचा भी था और जो सोचता था कि आलबर्ट महारानी के लिये बहुत ही उत्तम बर होगा उन दोनों राजकुमारों को इङ्गलिस्तान में फिर भेजा और चिट्ठी में उन दोनों का बहुत गुण गाया । इस तीन बरस के बीच में आलबर्ट और भी सुंदर और ज्ञानी हो गया था और महारानी उस के देखने से बहुत प्रसन्न हुई । तब उस ने अपने घर के लोगों से और बड़े राजमंत्री मेलबोर्न साहब से कहा कि यदि आप लोगों को अच्छा लगे तो मैं राजकुमार आलबर्ट से बिवाह करूं । वे सब इस बात से मगन हुए सो उन की मंगनी एक अद्भुत रीति से हुई । अंगरेजों का दस्तूर है कि लड़का लड़की के पास जाकर उस से बिन्ती करता है कि मेरे साथ मंगनी कीजिये परन्तु महारानी की बड़ी पदवी के कारण से यह अवश्य हुआ कि वह आलबर्ट से बिन्ती करे । आलबर्ट ने बड़ी मगनता से उस की बात को माना और इस मंगनी से वे और उन के सब नातेदार बहुत आह्लादित हुए । परन्तु राजसभा को इस बात का संदेश देना पड़ा क्योंकि उन लोगों की सम्मति बिना उस का बिवाह करना कठिन था । महारानी ने पीछे से इस सभा का वर्णन यों किया कि उस कमरे में बहुत प्रधान लोग एकट्ठे हुए पर मैं न जानती थी कि कौन २ वहां थे । मुझे जो कुछ कहना था सो लिखा हुआ था और मैं ने उसे पढ़के सुनाया । मेरा हाथ हिलता तो था तौभी पढ़ने में मैं ने एक भी भूल न किई । जब यह काम पूरा हुआ तब मैं बहुत ही मगन हुई ।

सन् १८४० ईसवी के चौथी फर्वरी को राजकुमार आलबर्ट फिर इङ्गलिस्तान में आ पहुंचा और सब लोगों ने बड़ी धूमधाम से उसे ग्रहण किया । बिवाह एक बहुत पुराने गिरजा घर में किया गया जो लंडन में है । वह गिरजा घर नाना प्रकार से बिभूषित था और

इङ्गलिस्तान के बड़े २ प्रधान और कुलीन जन उस में एकट्ठे हुए। सड़कों में बड़ी २ भीड़ें जय जयकार मनाती थीं।

दुल्हिन एक बड़ी उत्तम गाड़ी में अपनी माता और एक और प्यारी मित्रिन के संग बैठी थी और उस का बस्त्र बिलकुल श्वेत था और मुकुट की सन्ती अब उस के सिर पर श्वेत फूलों का हार बंधा हुआ था। गिरजा घर में चार चौकियां आगे रक्खी हुई थीं। दो पर दुल्हिन और दुल्हा बैठ गये। दुल्हिन के बायें ओर उस की माता बैठ गई और दुल्हे की दहिनी ओर महाराजा विलियम की बिधवा बैठ गई। इन चौकियों के पीछे महारानी की बारह विशेष सहेलियां अति उत्तम पहिरावे पहिने हुए खड़ी थीं और समस्त घर मित्रों और महाशयों से भरा था। तब दस्तूर के अनुसार बिवाह की रीति पूरी हुई और सब मसीही स्त्रियों की रीति पर महारानी ने बर को बचन दिया कि मैं तुम को प्यार करूंगी और जब लों मृत्यु हम तुम को अलग न करे तुम्हारा आदरसन्मान करूंगी और तुम्हारी आज्ञा में रहूंगी। आलबर्ट ने भी बचन दिया कि मैं तुम्हें प्यार करूंगा और तुम्हारी रखवाली करूंगा जब लों मृत्यु हम तुम को अलग न करे। और सब लोग जानते हैं कि पीछे के दिनों में उन दोनों ने कैसी अच्छी रीति से इन बचनों को पूरा किया। जब आलबर्ट ने महारानी की अंगुली पर छल्ला पहिनाया तब भीतर से किसी ने सैन किया और बाहर तोप की सलामी हुई और लंडन नगर के सब रहनेवालों को प्रगट हुआ कि हमारी प्यारी महारानी की शादी हो चुकी।

बिवाह के बड़े जेवनार के पीछे दुल्हा दुल्हिन गाड़ी में सवार होकर बिन्डसर नाम राजभवन को जो ग्यारह कोस दूर है चले गये और सारी सड़क फूलों और झंडों और पताकों से बिभूषित थी क्योंकि समस्त देश में लोग अपनी नई महारानी के आनन्द में मगन हुए।

शादी के कितने दिन पीछे दुल्हिन ने अपने किसी मित्र को दुल्हे की यों बड़ाई लिखी कि मैं जानती हूं कि जगत भर में उस से बढ़कर कोई धर्म्मी और प्यारा और उत्तम जन कहीं नहीं मिल सक्ता है ।

जब लों वे एक संग रहते तब लों उन दोनों में बड़ी प्रीति पाई जाती थी । बिवाह के पंद्रह दिन पीछे आलबर्ट का पिता फिर अपने देश को लौट गया । इस के वियोग से आलबर्ट को बड़ा शोक हुआ क्योंकि पिता पुत्र में बड़ा स्नेह था । उस समय महारानी की एक चिट्ठी में यों लिखा था कि आलबर्ट ने मेरे ही लिये पिता भाई जन्मभूमि सब को छोड़ दिया है ईश्वर करे कि मैं उस को पूरा दिलासा दूं । ईश्वर के अनुग्रह से मैं शक्ति भर सब कुछ करूंगी ।

बिवाह के पीछे वे दोनों बड़े आनन्द से रहने लगे पहिले उन में आपस की प्रीति थी । दूसरे वे दोनों एक प्रकार की बातों पर मन लगाते थे । और तीसरे राज्य का भार दुल्हे की सहायता से हलका हो जाता था । दोनों अच्छी रीति से गीत गाते बाजा बजाते और चित्र खींचते थे । बार बार दुल्हा दुल्हिन के लिये पुस्तकें पढ़ पढ़कर सुनाता था और तब दुल्हिन भी अपने दुल्हे के लिये पढ़के सुनाती थी । सांझ सवेरे वे बहुत करके गाड़ियों पर सवार होकर बाहर हवा खाने के लिये निकलते थे । बिवाह के कितने महीनों के पीछे आलबर्ट बड़ी जोखिम से बच गया । उस दिन गाड़ी पर सवार होकर वह शिकार खेलने को निकल गया परन्तु चलते ही उस का घोड़ा बिगड़कर भागा और एक वृक्ष की डालियों के नीचे चलकर आलबर्ट भूमि पर गिरा परन्तु उस के बहुत बड़ी चोट नहीं लगी । विक्टोरिया एक खिड़की से उसे जाते देख रही थी और घोड़े के भागने से बहुत भयभीत हुई और फिर अपने प्यारे पति को कुशल क्षेम से पाकर बहुत ही मगन हुई ।

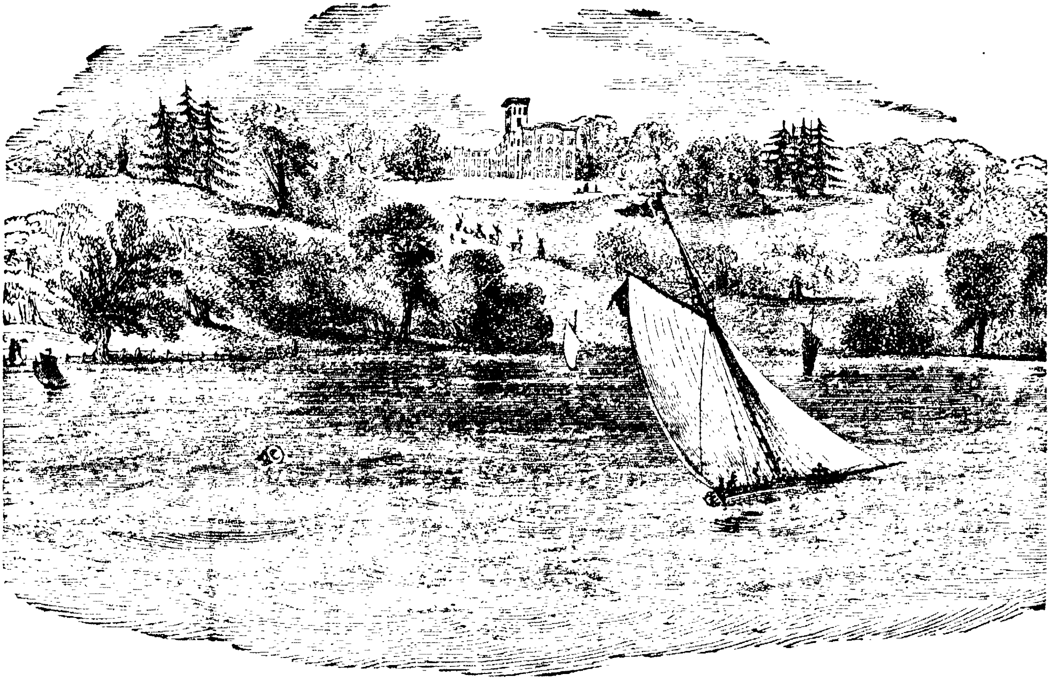
महारानी चाहती थी कि मेरा पति महाराजा का सा पद पावे जिस्तें दोनों में बराबरी होवे। परन्तु प्रधान लोग किसी कारण से इस बात को न चाहते थे। उन की इच्छा यह थी कि पूरा अधिकार महारानी के हाथ में रहे और कि आलबर्ट को उस के पति होने से आदर मिले और कि उस का नाम राजकुमार आलबर्ट प्रसिद्ध होवे। महारानी इस बात से प्रसन्न न हुई तौभी राजकुमार ने कहा कि इस बात के लिये हम इङ्गलिस्तान के लोगों से झगड़ा न करें। और पीछे आलबर्ट की बोलचाल ऐसी सीधी थी और राज्य की बातों में वह ऐसा परिश्रमी ठहरा और उस का ज्ञान भारी बातों में ऐसा ठीक पाया गया कि यद्यपि महाराजा का नाम उसे दिया नहीं जाता था तौभी उस का सन्मान महाराजा से कम न था और विशेषकर महारानी उसे हर बात में आगे बढ़ा देती और उस का आदर कर देती थी और उस ने उस के प्रेम का यों बर्णन किया कि रोग के समय में वह आप हमारी सेवा और रक्षा करता मुझे और लोगों के हाथ में नहीं छोड़ देता था। उन की रखवाली माता की सी रखवाली थी और उस से अधिक हितकारी और चतुर और कोमल पालक नहीं मिल सक्ता है। राज-कुमार बड़ा विद्यार्थी था और वह इस अर्थ से अधिक सीखता जाता जिस्तें ज्ञानवान होके महारानी को अधिक सहायता दे। राज्य की बातों में वह उस के परामर्श पर बहुत भरोसा रखती थी क्योंकि राज-कुमार महारानी की और देश की भलाई को छोड़ और किसी बात की चिन्ता न करता था तौभी महारानी जानती थी कि अधिकार मेरे हाथ में है और सब कुछ मुझ से पूछा जायगा।

पीछे के दिनों में उन के नौ बेटे बेटियां उत्पन्न हुए जिन का कुछ बर्णन पीछे लिखा जायगा। उन के नाम और गिन्ती यह हैं। १—विक्टो-रिया अडीलेड जो माता के नाम से कहलाती थी परन्तु पीछे से प्रिन्सेस

रायल के नाम से प्रसिद्ध हुई सन् १८४० के २१वीं नवम्बर को उत्पन्न हुई । २—आलबर्ट एडवर्ड जो पीछे से प्रिन्स आफ वेल्स नाम से प्रसिद्ध हुआ ९वीं नवम्बर सन् १८४१ ईसवी में उत्पन्न हुआ । ३—प्रिन्सेस एलिस सन् १८४३ ईसवी के २५वीं अप्रेल को उत्पन्न हुई । ४—आलफ्रेड जो पीछे ड्यूक आफ एडिनबर्ग नाम से प्रसिद्ध हुआ सन् ईसवी १८४४ के ६वीं अगस्त को उत्पन्न हुआ । ५—हेलेना जो प्रिन्सेस क्रिसतिएन नाम से प्रसिद्ध है सन् ईसवी १८४६ के २५वीं मई को उत्पन्न हुई । ६—लूईज जो पीछे मार्शनस आफ लोर्न नाम से प्रसिद्ध हुई सन् ईसवी १८४८ के २१वीं मार्च को उत्पन्न हुई । ७—आर्थर जो ड्यूक आफ कान्नाट कहलाता है सन् इसवी १८५० के १ मई को उत्पन्न हुआ । ८—लिओपोल्ड जो पीछे ड्यूक आफ आलबनी कहलाता सन् ईसवी १८५३ के ७वीं अप्रेल को उत्पन्न हुआ । ९—बीट्रीस सन् ईसवी १८५७ के १४वीं अप्रेल को उत्पन्न हुई ।

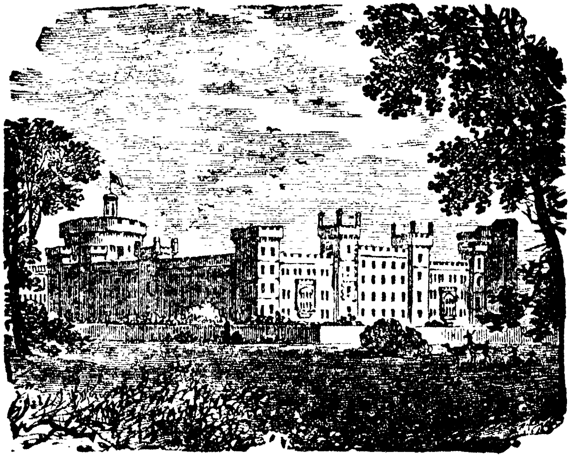
माता पिता बड़े प्रेम से इन बालकों की रखवाली करते थे और उन को अच्छी से अच्छी शिक्षा करवाते थे । राजकुमार अगणित जोखिमों और परीक्षाओं से घिरे रहते हैं । बहुत बातें उन के मनों में घमंड को बढ़ा देती हैं । वे इस का प्रयोजन नहीं देखते कि परिश्रमी हो जायें । उन का आपस्वार्थी बन्ना सहज और परस्वार्थी बन्ना कठिन है । बहुत से लल्लोपत्तो करनेहारे उन्हें घेरे रहते और बहुत से बुरे दस्तूर उन्हें सिखाने चाहते हैं । अपने जेठे पुत्र के उत्पन्न होने के पीछे महारानी ने एक मित्र को यों लिख भेजा कि मैं इस का बहुत सोच करती हूं कि बेटा किस के सदृश देख पड़ेगा । आप जानती हैं कि मैं बड़ी अभिलाषा से प्रार्थना करती हूं कि बेटा तन और मन बरन हर एक बात में ठीक अपने पिता के समान हो जाय ।

आसबोर्न राजभवन में रहना।



आसबोर्न का भवन।

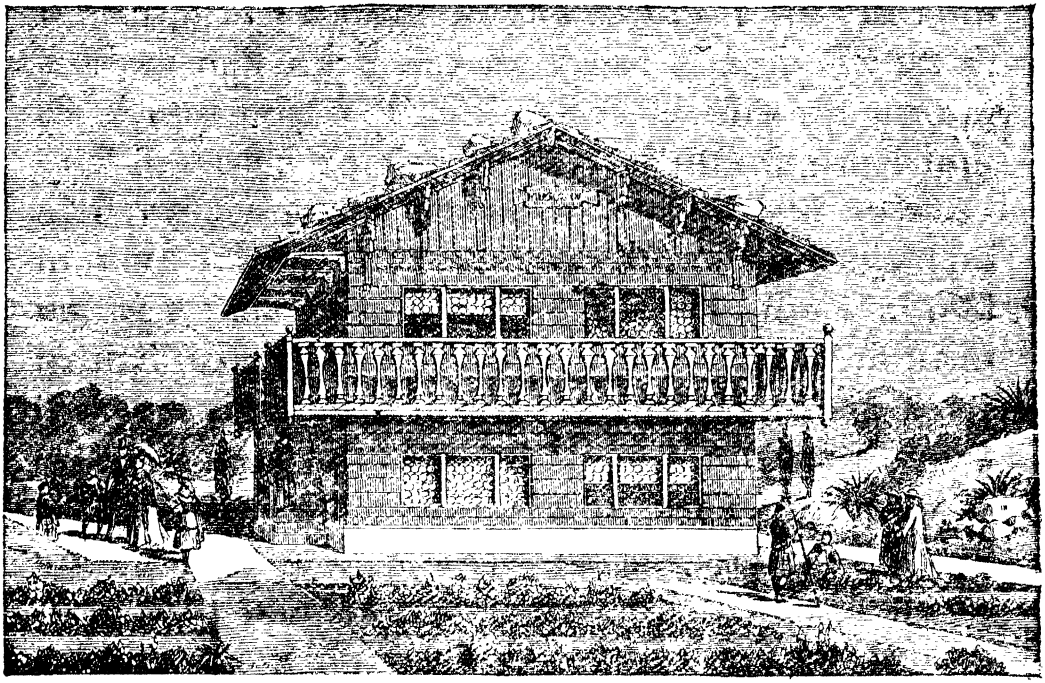
इङ्गलिस्तान के दक्षिण तीर एक आइल आफ वाइट नाम एक बहुत सुंदर टापू है जहां का जल और हवा बहुत अच्छी है और महारानी ने सोचा कि वहां बालकों के रहने के लिये बहुत अच्छी जगह होगी। सो सन् ईसवी १८४६ में महारानी ने वहां आसबोर्न नाम एक भवन और जमीन को मोल लिया। पुराना भवन छोटा था परन्तु स्थान बहुत रमणीक था। सो आलबर्ट ने एक नये प्रतापी राजभवन का नकशा खींचा और उस नकशे के अनुसार वह शीघ्र बनाया गया। वह समुद्र तीर पर बना था और उस के समीप अच्छे वृक्ष और सुंदर वाटिका लगाई गईं।



आसबोर्न का भवन दूसरी ओर से ।

जब घराना पहिले इस भवन में रहने को आया तब राजकुमार आलबर्ट ने एक गीत सुनाया जिस का अर्थ यह था कि हमारे यहां आने पर बरन हमारे सारे आनेजाने पर ईश्वर की आशीष होवे। हमारे रोज की रोटी के संग हमारे सारे कार्य्यों के संग ईश्वर की आशीष होवे। ईश्वर हम सभों को अपना सत्य सेवक बनावे और जब हमारा मरणकाल होवे तब हम सब को स्वर्गीयभवन में ग्रहण करे।

जब २ वे इस टापू में आया करते थे तब २ राजकुमार लोग बहुत ही मगन होते थे। वे बाहर मैदान चौगान में फिर सक्ते और खेलकूद सक्ते थे क्योंकि वह दिहात की जगह थी। भवन के समीप विशेषकर लड़कों के लिये एक छोटा सा घर स्विस काटेज के रूप का बना था और नौ बालकों के लिये इस घर के पास नौ बगीचे लगाये गये हर एक बालक के लिये एक एक और एक एक के पास बाग के हथियार भी थे जिन पर उन के नाम लिखे थे जिस्तें हर एक अपनी २ वस्तु को पहिचानें। इन बगीचों में वे रोज माली के बताने से परिश्रम करते थे और इस काम में दो तीन घंटे लग जाते थे। राजकुमारों के लिये एक



आसबोर्न का स्विस काटेज ।

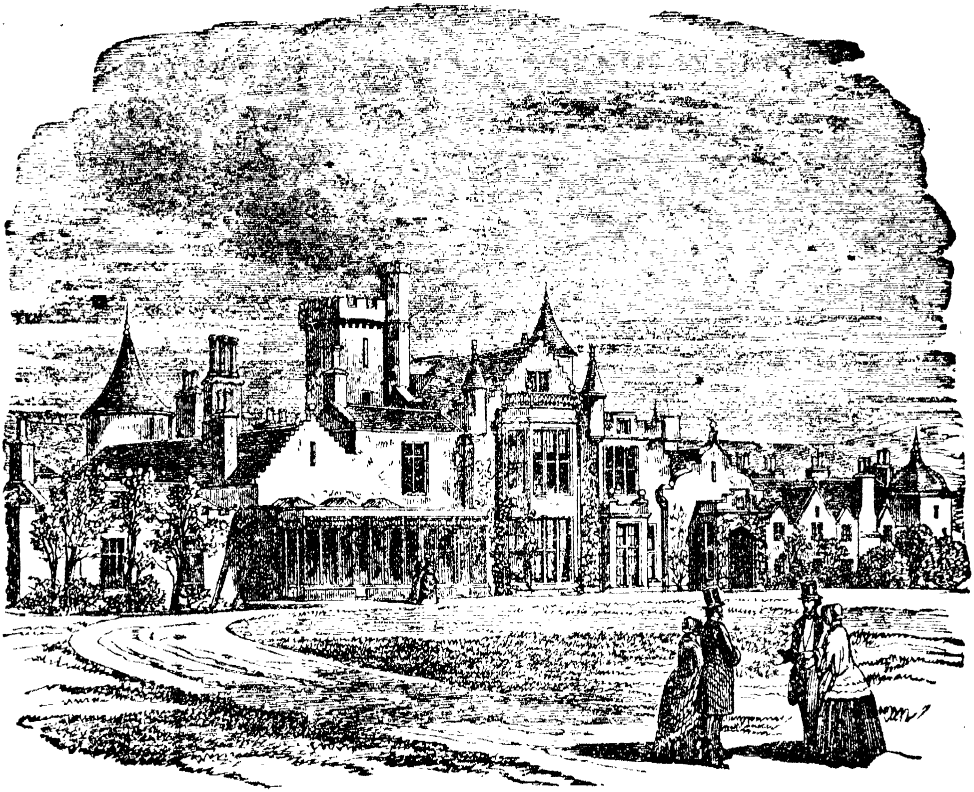
बढ़ईखाना भी बना था और उस में वे सब बढ़ई का काम सीखते थे और पिता के सिखाने से लड़कों ने एक गढ़ बनाया बरन उस की ईंटें तक भी बनाईं हां उन्हों ने अपने हाथों से उस के लिये सब कुछ बनाया।

राजकुमारियों के लिये स्विस काटेज में एक कोठरी में रसोईघर बनाया गया वहां उन्हों ने भोजन पकाने का सारा काम सीखा और वे बहुत तरकारियां और फल जो उन के बगीचों में पैदा होते थे वहां पकाया करती थीं। कभी २ वे आप यह खाना खाया करती थीं अथवा माता पिता को न्योता करके खिलाती थीं पर बहुधा यह भोजन कंगालों के घर में बांटा जाता था। उस छोटे से घर में एक कौतुकशाला भी था जिस में सब अद्भुत प्रकार के कीड़े और पत्ती और पत्थर आदि

बस्तुन को रखते थे जो इधर उधर उन्हें मिलते थे । यों वे सीखते थे कि यह कैसी पृथिवी है जिस में हम रहते हैं और बहुत बस्तुओं के नाम रूप गुण आदि सीखते जाते थे । इस से जाना जाता है कि माता पिता बड़ी प्रीति से अपने बच्चों का पालन पोषण करते थे ।

पर उन दिनों में पढ़ना उन का मुख्य काम था । उचित है कि ऐसे बड़े राज्य के राजकुमार बहुत विद्यावान हो जायें और जैसा माता पिता दोनों भली भांति के विद्यार्थी थे वैसा ही चाहते थे कि सब बालक भी हो जायें । भवन में अनेक पढ़ानेवाले हुए परन्तु पिता इन सब के काम को आप ही देखा करता था । जो पुस्तकें राजकुमारों के हाथ में रक्खी जाती थीं उन को वह आप ही पहिले पढ़ा करता था । महारानी भी देखा करती कि किस रीति से बालकों को शिक्षा होती है और कभी २ आप उन की शिक्षक बनती थी । एक समय जब बालक छोटे थे तब स्काटलण्ड की एक मिस साहिबा उन को पढ़ानेवाली थी एक दिन वह बड़े शोक से महारानी के पास आई और बोली कि आप की आज्ञा हो तो मैं अपने काम को छोड़ा चाहती हूं क्योंकि मैं ने सुना है कि मेरी माता बहुत ही रोगी हो गई है और अवश्य है कि मैं जाके उस की रखवाली करूं । आप किसी को मेरी जगह में रख दीजिये तो मैं माता पास चली जाऊंगी । महारानी ने बड़ी दया से कहा कि काम को मत त्यागो बरन अपनी माता के पास जाके उस के लिये जो कुछ करना है सो करो और जब वह अच्छी हो जाय तब यहां आके काम में फिर हाथ लगाओ और इस बीच में राजकुमार आलबर्ट और मैं बालकों का पढ़ना सुनूंगी जिस्तें उन की कुछ हानि न हो । मन में शान्ति करके चली जाओ ।

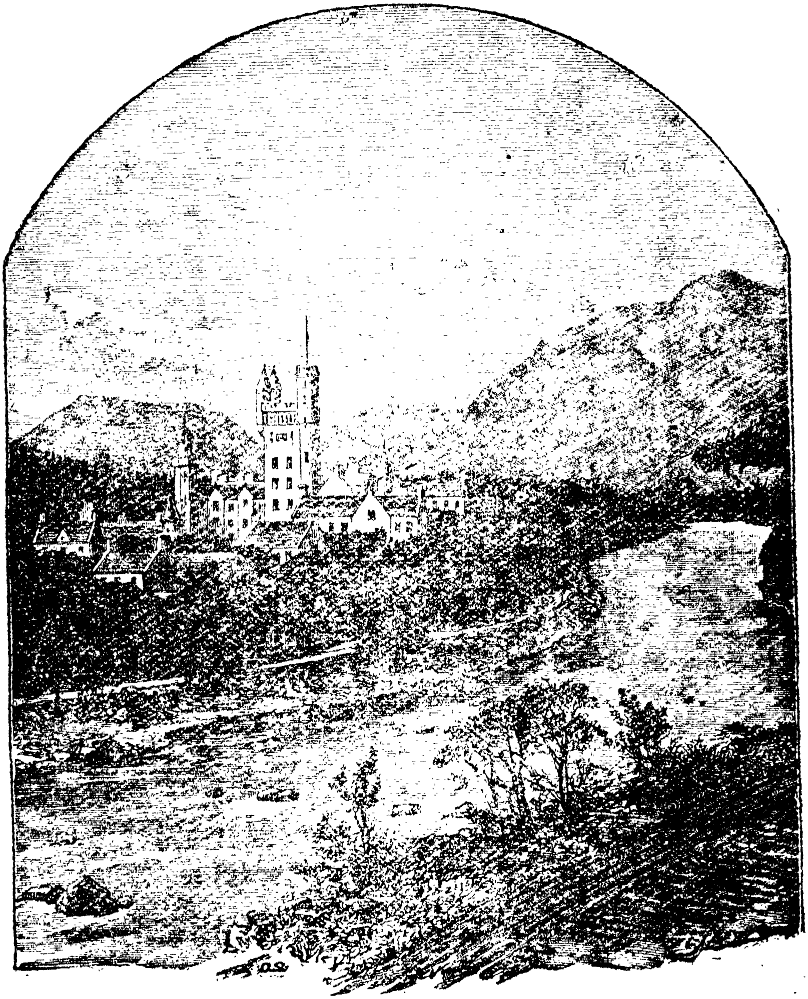
बालमोरल राजभवन में रहना ।



बालमोरल का रूप जब मोल लिया गया ।

जैसा हिन्दुस्तान में साहिब लोग गर्मी में अपने घरानों को पहाड़ों पर भेजने चाहते हैं वैसा ही महारानी भी एक स्थान चाहती थी जहां गर्मी के दिनों में अपने बालकों सहित जा रहे । सो सन् ईसवी १८४८ में उस ने स्काटलण्ड के पहाड़ों में बालमोरल नाम एक राजभवन और जमीन को मोल लिया । उस समय उस भवन में समस्त घराने और सेवकों और आनेजानेवालों के लिये जगह न थी सो महारानी ने उस को और भी बड़ा बनवाया और अब उस की ऊंची भीतें और

मीनारें दूर से दिखाई देती हैं। यह भी मानो दिहात में है और बड़े नगरों का हुल्लड़ वहां तक पहुंच नहीं सक्ता बरन जंगली पक्षी वृक्षों में गाते और हिरन समीप के पहाड़ों में कूदते फिरते हैं। देखने में यह स्थान बहुत अच्छा था और भवन एक नदी के पास बना था।



बालमोरल की नदी।

यहां मलिका श्रीर भी स्वाधीन होके रह सक्ती श्रीर जहां चाहती तहां चल फिर सक्ती थी । जब पहिले उस स्थान को देखा तब उस ने कहा कि यह बड़ी कुशल श्रीर बिश्राम की जगह देख पड़ती है । यहां आकर हम संसार के दुःखें को भूल सक्ते हैं ।

उस भवन के समीप कहीं २ कंगाल किसान लोग रहते थे सो विक्टोरिया श्रीर आलबर्ट उन के घरों पर जा जाकर श्रीर उन की दशा बूझकर उन पर बड़ी दया करते थे । जहां लों हो सका हर एक घराने को जो उस की जमीन पर रहते थे एक घर श्रीर इतनी भूमि जिस में बाटिका लगावें अथवा गाय चरावें दिई जाती थी । उन के बालकों के लिये एक स्कूल खुला था श्रीर महारानी आप कभी २ स्कूल में जाती श्रीर बालकों के पढ़ने को सुनती श्रीर उन्हें अपने हाथ से इनाम देती थी । श्रीर जब लड़के लड़कियां उस के लिये गीत गाती थीं तब वह बहुत प्रसन्न होती थी ।

इस बर्णन से जाना जाता है कि महारानी कहां लों दुखियों पर दया करती थी । जब राजभवन उस के लिये तैयार होता जाता था तब अकस्मात से उन घरों में जिन में राज बढ़ई आदि रहते थे आग लगी । उस आग के बुझाने के लिये राजकुमार आप दौड़ता था श्रीर अपने हाथ से सहायता करता था यहां लों कि पानी के डोल भर भरकर पहुंचाता था । महारानी भी वहां चली आई श्रीर जब जान गई कि घर न बच सकेंगे श्रीर कि बेचारे मजूरों ने जो कुछ रुपये परिश्रम कर करके बटोर रक्खे थे सो जलते घरों में भस्म हो जायेंगे तब उस ने कृपा करके अपने पास से उतने रुपये उन्हें दे दिये ।

महारानी आप कंगालों के घरों में जाकर श्रीर बैठे बैठे उन से बातचीत करकर बहुत समय बिताती थी । यदि इन घरों में कोई छोटे बालक होते तो उन के लिये लंडन नगर से नाना प्रकार के खिलौने मंगवाती थी ।

उन दिनों में जब पर्वतीय स्थान में रहते थे तब महारानी अपने लिये एक पुस्तक में हर रोज का वृत्तान्त लिख देती थी और पीछे प्रजा को सुख देने के लिये उस ने बहुत से वृत्तान्त उस पुस्तक में से निकालकर छपवा भी दिये । एक दिन का वृत्तान्त यह है

आज राजकुमार अलफ्रेड को संग लेकर कहीं गया था सो मैं राजकुमारियों और लेडी चरचिल को साथ लेके हवा खाने को निकल गई । हम पैदल जाते थे । पहिले एक दूकान में जाकर हम ने कुछ कपड़ा आदि कंगाल लोगों के लिये मोल लिया । तब गाड़ी में सवार होके हम ने एक मेम साहिबा के यहां जाके कहा कि हमारे साथ चलिये और बताइये कि किस २ घर में दुःखी लोग रहते हैं जिन को दिलासा देना उचित है । मार्ग में हमें एक स्त्री मिली और मेम साहिबा ने कहा कि यह ८६ बरस की बुढ़िया और बहुत धनहीन है सो उस से कुछ बातचीत करके मैं ने उसे एक ऊनी साया दिया । बुढ़िया बहुत मगन हुई । वह मेरे हाथ को पकड़के ईश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करती थी और आनन्द के आंसू उस की आंखों से गिरते थे ।

तब हम किट्टी किअर के घर में गये । यह भी एक ८६ बरस की बुढ़िया थी और बहुत दृढ़ और सीधी खड़ी होती और हम को पहचानकर हमारा बड़ा आदर करती थी । तब हमारे साम्हने बैठकर सूत कातने लगी । उस को भी मैं ने ऊनी साया दिया । उस ने कहा ईश्वर इस लोक और परलोक में सदा आप के और आप के घर के लोगों के संग प्रेम से रहे और ईश्वर आप को सदा सब कष्टों से बचाये रक्खे । वहां से हम बीबी सिम्मोन्स के यहां गये वह भी अस्सी बरस की बुढ़िया थी और बहुत झुकी हुई थी । वह बहुत हंसमुख थी और हर एक के हाथ को पकड़ती और पूछती थी कि महारानी कौन हैं और हम सभों के लिये प्रार्थना करती थी ।

हम और तीन घरों में गये । उन में से एक में एक रोगी लड़का पड़ा था और दूसरे में एक बुढ़िया थी । मैं ने उस को भी कुछ गर्म कपड़ा दिया । वह बहुत आनन्दित हुई और कहने लगी कि आप मुझ पर बहुत दया करती हैं । आप हर साल मुझ को अधिक देती हैं और हर साल मैं भी बूढ़ी होती जाती हूं ।

जब महारानी सुनती थी कि किसी घर में कोई रोगी पड़ा है तब उन के लिये बहुत चिन्ता करती थी क्योंकि उस का मन कृपा और अनुग्रह से भरपूर था । जब प्रयोजन होता तब कंगाल रोगियों के लिये औषधि भेजा करती थी और मरनेहारों के पास बैठकर वह उन्हें समझाती और दिलासा देती और परलोक जाने के लिये तैयार करती थी ।

राजकार्य्य में महारानी का परिश्रम ।

स्काटलण्ड के पहाड़ों में गर्मी के दिनों में महारानी के लिये रहना अच्छा था परन्तु कोई न समझे कि वहां वह अपने राजकार्य्य से निश्चिन्त रहती थी । वह उन बातों को जो उस के आगे उपस्थित किई जाती थीं बहुत परिश्रम से एक एक करके उठाती और ध्यान करके जैसा उचित समझती आज्ञा देती थी । जब लों बालमोरल में रहा करती थी वह अपने काम को इस रीति से चलाती थी । महारानी के बहुत नातेदार और मित्र यूरप के राजाओं और कुलीन जनों में इधर उधर हैं सो हर अठवारे में वह एक दिन भर उन के पास चिट्ठी लिखने में बिताती है और उन की कुशल क्षेम पूछती और उन में मित्रता बढ़ाती है । फिर उस के घर का लेन देन और सब हिसाब उस को दिखाया जाता है और वह जान लेती कि हमारा कितना व्यय



प्रिन्स आलबर्ट ।

है और कितना बचेगा । फिर बहुत से लोग इधर उधर से तार से संदेश बालमोरल को भेजा करते हैं । ऐसे दिन थोड़े होंगे जिन में पचास के लगभग तार की चिट्ठियां वहां नहीं पहुंचतीं सो दूसरे दूसरे दिन महारानी तीन तीन घंटे लों इन चिट्ठियों को पढ़ती और उत्तर बताती है । इतवार को महारानी ईश्वर की आज्ञा के अनुसार बिश्राम करती है और जैसा ऊपर बर्णन हुआ वह एक दिन हर

अठवारे में नातेदारों के लिये बिताती है सो पांच दिन राजकार्य्य के लिये रहे ।

लंडन वहां से बहुत दूर है तौभी सब राजमंत्री अपने २ काम के विषय में महारानी को बार २ संदेश भेजते और उस से आज्ञा मांगते हैं । रोज एक सेवक चिट्ठियों की बड़ी थैली ले आता और घंटे भर में ये सब लेखकों से छांटी जातीं और तब महारानी से कहा जाता है कि डाक अब आप के देखने के लिये तैयार है । बहुत चिट्ठियां जैसी नातेदारों को वा विशेष मित्रों को वा विलायती राजाओं को छोड़ी जाती हैं जिन्हें महारानी अपने हाथों से उन्हें खोले । और सभों को लेखक लोग खोलते और उन के अर्थ को बताते हैं । डाक देखने के पीछे कभी महारानी की किसी राजमंत्री के संग भेंट होती और देर लों राज के कार्य्यों की बातचीत होती और कभी भोजन करते समय मंत्री महारानी के पास बैठता और खाते २ और भी राज्य की बातों की चर्चा करता है और जब सांझ होती तौभी दिन का परिश्रम समाप्त नहीं होता । कभी २ आधी रात लों किसी भारी बात की चर्चा रहती है ।

महारानी के प्राण की जोखिम ।

प्रजा महारानी को बहुत प्यार करती है और हां उस का स्वभाव ऐसा है और वह ऐसे प्रेम और हित से राजकार्य्य करती है कि वह सभों के प्रेम के योग्य ठहरती । तौभी हर एक देश में दो चार दुष्ट होते हैं जो सोचते हैं कि हम कभी ऐसा कोई अच्छा काम न कर सकेंगे कि जिस से हमारा स्मरण बना रहेगा तो हम ऐसी कोई बड़ी दुष्टता करें कि जिस से हमारा स्मरण अवश्य बना रहे । दो चार ऐसे दुष्ट इङ्गलिस्तान में भी पाये गये ।

एक दिन सांझ को आलबर्ट और विक्टोरिया दस्तूर के अनुसार गाड़ी में सवार होकर हवा खाते थे कि अकस्मात एक आदमी ने जो मार्ग के तीर झाड़ियों में खड़ा था अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर और महारानी की ओर निशाना लगाकर चलाई। महारानी उस समय दूसरी ओर देखती थी और थोड़ी देर तक उस ने न जाना कि क्या हुआ। आलबर्ट ने उस का हाथ पकड़ लिया और पूछा कि क्या आप डर गईं। तब उस ने देखा कि उस आदमी के हाथ में दूसरी पिस्तौल है और उस को भी गाड़ी की ओर चलाया चाहता है सो आलबर्ट ने झट महारानी को अपनी ओर खींच लिया और गोली उस के सिर के ऊपर से निकल गई।

उस समय महारानी अपनी माता से भेंट करने को जाती थी और उस ने सोचा कि मैं जो वहां न चलूं तो कदाचित् इस बात का संदेश माता को पहुंचे और वह घबड़ा जायगी सो वे आगे चले गये। तब लौटकर वे वहां गये जहां कुलीन जनों की गाड़ियां उस समय चलती थीं जिस्तें सब लोग जानें कि महारानी को चोट नहीं लगी। उस का मुख बहुत पीला दिखाई देता था तौभी वह बड़े साहस से अपनी दौड़ को पूरा कर गई। लौटते समय इस बात की चर्चा फैल गई और सड़कों पर बड़ी भीड़ें लग गईं जो महारानी की जय जय पुकारती थीं। लोगों ने सोचा कि वह आदमी बावला है और उस के घराने में भी बावलापन है सो वह पागलखाने में बंद किया गया।

दो बरस पीछे एक इतवार को जब वे गाड़ी में सवार होके गिर्जा से लौटे आते थे तब आलबर्ट ने किसी आदमी को देखा जो मलिका की ओर पिस्तौल बढ़ा रहा था परन्तु उस की गोली न चली। चुपके से पूछा गया और दो एक औरों ने उस आदमी को देखा पर वह उस दिन पकड़ा न गया। उस दिन महारानी कुछ रोगी थीं तौभी उस ने

बड़े साहस से कहा कि हम कल दस्तूर के अनुसार चलेंगे चाहे प्राण रहे वा जाय । उन्हों ने किसी को संग चलने न दिया ऐसा न हो कि दूसरों की जोखिम होवे बरन विक्टोरिया और आलबर्ट गाड़ी में सवार होके निकल गये । जब वे घर की ओर लौटके आते थे और संदेह करते थे कि कहीं इन भीड़ों में वह दुष्ट छिपा न हो और वे इधर उधर देखते भी जाते थे तब अचानक वह दुष्ट पांच क़दम दूरी पर दिखाई दिया और फिर उस के हाथ में पिस्तौल थी । उस ने उसे झट चलाया परन्तु किसी को कुछ हानि न हुई । महारानी ने कहा कि जब पिस्तौल चल चुकी थी तब मैं आनन्दित थी क्योंकि पहिले दिन से मैं इस बाट को जोहती थी और यह मुझ को दुःख की बात थी । अब मुझ पर से माना एक भारी बोझ उतर गया और मैं ईश्वर का धन्य मानती हूं जिस ने दो बार मुझे दुष्टों के हाथ से बचाया है । एक सिपाही ने उस आदमी को पकड़ा । वह न्यायस्थान में पहुंचाया गया और पीछे आज्ञा दिई गई कि इस को फांसी दिई जाय पर महारानी की बिन्ती से वह यहां लों क्षमा किया गया कि वह जीवन भर के लिये काले पानी भेजा गया ।

इस के पीछे दो तीन बार बावले लोगों ने महारानी पर झपटके उसे मार डालने चाहा परन्तु सेवक लोग उस की अच्छी रखवाली करते थे और ईश्वर की रक्षा से उस को किसी से हानि न पहुंची । इन सब समयों में महारानी बड़ा साहस दिखाती थी । एक बार जब वह अपने तीन लड़कों के संग गाड़ी में सवार होके जाती थी तब किसी दुष्ट ने पिस्तौल उन पर चलाई । महारानी ने केवल कोचवान से कहा कि आगे बढ़ो और तब लड़कों से बातचीत करती रही । कौन शूरबीर इस से बड़ी बहादुरी दिखा सक्ता है ।

राजकुमार का परिश्रम ।

विक्टोरिया के पति का नाम आलबर्ट था और उस के जेठे पुत्र का नाम भी आलबर्ट है सो लोग पिता को प्रिन्स आलबर्ट वा प्रिन्स कान्सार्ट कहते थे और पुत्र प्रिन्स आफवेल्स कहलाता है। प्रिन्स आलबर्ट जर्मन का राजकुमार था तैाभी जब से इङ्गलिस्तान में आया तब से उस को बड़ी इच्छा यह थी कि मैं अंगेज सा बनूं और अंगेजी रीति व्यवहारों और व्यवस्थाओं और शिल्पकारियों और जो कुछ इस देश में है उस को भली भांति जानूं। सो वह बहुत इधर उधर जाता और देखता सुनता था। वह कई घंटे रोज एक बारिष्टर के संग नीतिविद्या को और महारानी के संग इतिहास की पुस्तकों को पढ़ता रहता था।

वह कभी कभी बड़ी सभाओं में उपदेश भी अंग्रेजी भाषा में दिया करता था। उस ने पहिला उपदेश सन् ईसवी १८४० के जून में दिया जिस में कहा था कि जहां कहीं लोग दास दासियों को रखते हैं यह बुरा दस्तूर है और चाहिये कि ज्ञानी लोग शक्ति भर इस कुरीति को मिटा दें। उस का मन दया से भरपूर था और जो कुछ दुखियों की सहायता के लिये कर सक्ता तहां तक बहुत यत्न करने को तत्पर रहता था। वह अपने देश के कंगालों की दशा पर और उन के घरों और उद्योगों की शिक्षा दिलाने की बहुत चिन्ता करता था और उस के उपायों से बहुतों को लाभ भी पहुंचा।

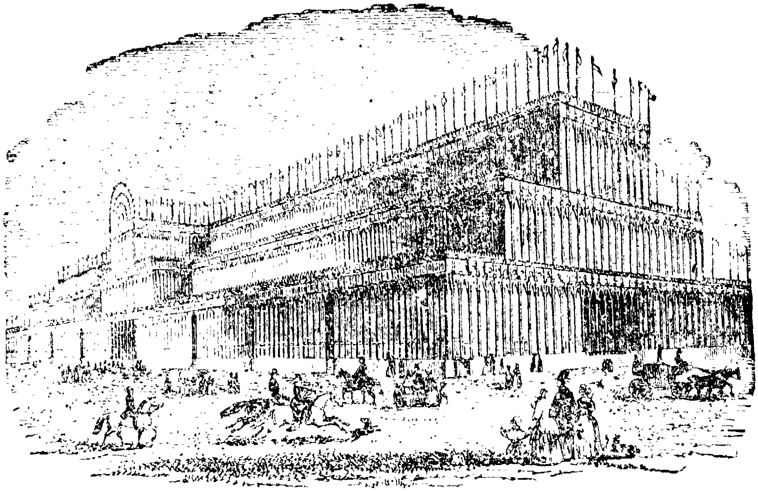
इङ्गलिस्तान में ऐसे मूर्ख बहुत हैं जो मजूरों में और उन में जो उन्हें काम देते हैं बैर को बहुत बढ़ाते हैं। एक उपदेश में प्रिन्स आलबर्ट ने कहा कि सत्य जानो कि धनी और निर्धनी शत्रु नहीं हैं बरन एक को दूसरे से प्रयोजन है। जो धनी लोग न होते तो मजूरों को मजूरी कैान देता और जो मजूर न होते तो धनी लोगों के बड़े बड़े कार्य्य किस रीति से किये जाते। यदि ये दो प्रकार के मनुष्य एक दूसरे से लड़ा करें तो

बड़ी अज्ञानता की बात है। तो उचित है कि हर एक हितैषी भला मनुष्य शक्ति भर इस अज्ञानता को दूर करे और विशेषकर वे ही इस बात में यत्न करें जिन को ईश्वर ने पद और महिमा दिई है। ईश्वर ने मनुष्य को ऐसा बनाया है कि बहुत बातों में वह बलहीन है बहुत में पूरा नहीं है बहुत बातों में लाचार है। वह यह चाहता है कि हर एक अपने लिये परिश्रम करे और कि हर एक बहुत बातों में दूसरों से सहायता मांगे। इस का कारण यह है कि ईश्वर की इच्छा यह है कि मनुष्य अकेला न रहे केवल घराने में नहीं बरन उस के बहुत से साथी और पड़ोसी और सहायक होवें। जो एक की शक्ति से बाहर है दूसरा उस के लिये कर सकेगा। जब वे औरों से जुटे रहते तब प्रेम और प्रीति फैलती जाती है।

यह उपदेश हिन्दुस्तान के लिये भी अच्छा है क्योंकि कितने समाचारपत्रों में अंगरेजों की बहुत निन्दा है और उन का यत्न यह है कि स्वामी सेवक में बैर उपजे। यह बड़ी मूर्खता है। स्वामी सेवक एक दूसरे से प्रयोजन रखते हैं और उचित है कि वे एक दूसरे के सहायक बनें। प्रिन्स आलबर्ट केमब्रिज यूनीवर्सिटी का अध्यक्ष बनाया गया और उस के यत्नों से कई बातों में यूनीवर्सिटी की बढ़ती हुई।

सब देशों का कौतुकप्रकाशन।

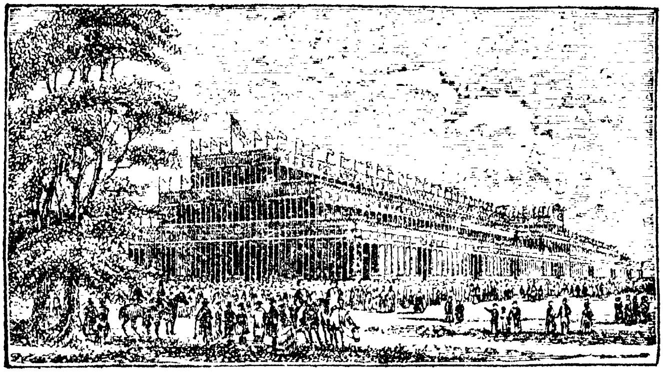
सन् ईसवी १८४८ में प्रिन्स आलबर्ट ने बिचार किया कि यदि लंडन नगर में एक बहुत बड़ा भवन बनाया जाय जिस में सब देशों की अच्छी से अच्छी कारीगरियां और देखने के योग्य बस्तु एकट्ठी होवें और सब देशों से लाखों लोग उन के देखने के लिये वहां आवें तो बहुत लाभ की बात होगी और सब लोग देखेंगे कि बस्त्र घर की सामग्री हथियार



कौतुकशाला ।

खिलौने आदि बस्तु और देशों में कैसे बनते हैं और अपनी बस्तुओं को उन से मिलावेंगे और अपनी बनावटों में बहुत कुछ सीखेंगे और सुधारेंगे और यों सब देशों का बाणिज्य और ब्योपार बढ़ेगा । पहिले यह नई बात थी इस लिये बहुत लोग इस के विरुद्ध चलते थे परन्तु दो बरस लों राजकुमार ने लोगों को समझाया और उस के लिये उपाय किया । उस ने ऐसे तमाशे की यह प्रशंसा किई कि मेरा आसरा यह है कि हर कोई जो इन सब कौतुक की बस्तुओं को एकट्ठा देखेगा सो अपने मन में दो बिचार करेगा । पहिला यह कि ईश्वर का बड़ा धन्य मानेगा कि उस ने संसार के सन्तानों पर इतनी दया दिखाई और उन की इतनी भलाई किई और दूसरा यह कि अलग २ सन्तानों की भलाई और उन्नति इस बात से होगी जब वे आपस में प्रेम से रहें और झगड़े लड़ाई को त्यागके हर बात में एक दूसरे के सहायक बनें ।

इस के पीछे कितने और ऐसे कौतुक के मेले बनाये गये हैं सो आज-कल यह नई बात नहीं है पर उन दिनों में ऐसा मेला कभी नहीं हुआ



कौतुकशाला ।

था । सो सन् ईसवी १८५१ में जब जगह तैयार होती जाती थी तब लंडन नगर में बड़ी भीड़ें एकट्ठी जाती थीं । सब देशों के वस्त्र उस की सड़कों में दिखाई देते थे सब सन्तानों की बोलियां सुनाई देती थीं । लंडन के एक रमना में एक नये प्रकार का भवन बहुत बड़ा बहुत ऊंचा वहुत प्रकाशित और चमकीले लोहे और कांच से बनाया गया और उस में सब देशों की देखने योग्य बनावटें सजाई गईं और यह भवन मई के पहिले दिन महारानी से खोला गया । उस दिन सबेरे को थोड़ा पानी बरसा परन्तु जब महारानी और आलबर्ट वहां पहुंच गये तब सूर्य्य निकला और सुन्दर भवन बहुत चमकता था । बाहर लाखों लोग सड़कों में खड़े थे और भीतर हजारों मेलेवाले महारानी की बाट जोहते थे ।

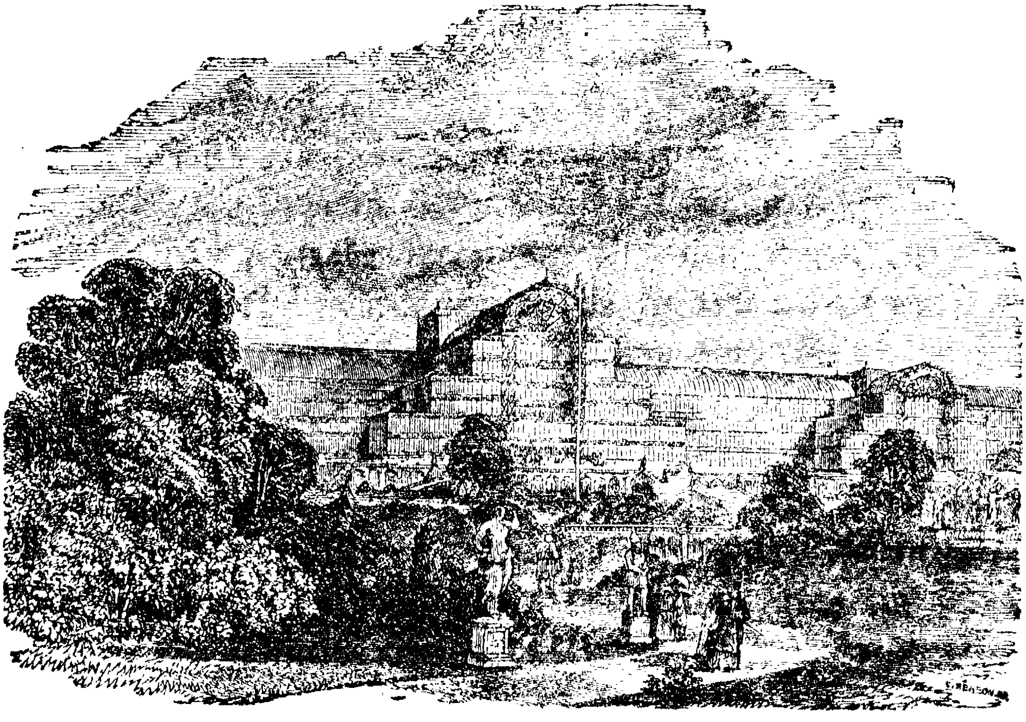
भवन के भीतर एक चबूतरा बना था और उस के ऊपर महारानी के लिये चौकी रक्खी गई थी । चारों ओर फल फूल वृक्ष फुहारे और हर एक सुन्दर वस्तु थीं और हर एक मनुष्य के मुंह पर आनन्द के चिन्ह थे । पहिले ६00 बाजे बजने लगे और उन के संग २00 आदमी गाने लगे पर मकान इतना बड़ा था कि इतना बड़ा शब्द बुरा न



महारानी का कौतुकशाला को खोलना ।

लगा। आलबर्ट ने पढ़के सुनाया कि किस रीति बड़े यत्नों से यह भवन बनाया गया है और सब बन्दोबस्त पूरा हुआ। तब महारानी ने कुछ कहा और तब ईश्वर से प्रार्थना किई गई और तब तुरही के बजाने से सब लोग जान गये कि अब इधर उधर फिरने और कौतुक देखने का समय है। यह भवन बहुत दिन तक खुला रहा अर्थात

ग्यारहवीं अक्तूबर तक रहा और इस बीच में साठ लाख देखनेहारों ने उस में प्रवेश किया और जब गिराया गया तब एक और भवन उस के निदर्शन पर लंडन से ४ कोस दूर एक पहाड़ी पर बना और हर साल हजारों लोग उस के देखने को जाते हैं। पहिला भवन जो प्रिन्स आलबर्ट के यत्नों से बना था बहुत बड़ा अर्थात् १८५१ फुट लम्बा और ४५६ फुट चौड़ा था।



कौतुकशाला जैसा अब है।

महारानी की बड़ी उदासी।

एक्कीस बरस लों महारानी बड़ी मगनता से अपने प्रिय पति के

संग रही तब शोक के दिन आये । उन के नौ बच्चे हुए और ये अब लों जीते थे । बड़ी बेटी का बिवाह सन ईसवी १८५८ में जर्मन के बड़े राजकुमार के साथ हुआ पर उस शादी का आनन्द शीघ्र उदासी में बदल गया । सन ईसवी १८६१ के मार्च में महारानी की प्यारी माता डचेस आफ केन्ट इस संसार से कूच कर गई । वह ७५ बरस की अवस्था में निर्बल और रोगी थी तौभी महारानी ने उस के मरने से बहुत शोक किया । प्रिन्स आलबर्ट ने किसी से कहा कि महारानी बहुत बिलाप करती है अब दो बरस से वह अपनी माता की बहुत बड़ी रखवाली करती रही है और रात दिन इस बात की चिन्ता करती रही कि किस रीति से माता को सुख देऊं और इस चिन्ता और दया से उस के मन को बहुत लाभ पहुंचा था ।

उसी साल के दिसम्बर में जब महारानी का मन माता के मरने से उदास था तब और भी बड़ी आपदा उस पर पड़ी । प्रिन्स आलबर्ट को तप चढ़ी । कई बरस से वह कमजोर हो गया था और कभी २ रोगी भी हो जाता था तौभी सब कार्य्य तन और मन से करता रहता था यहां लों कि देखनेहारे उसे भला चंगा जानते थे परन्तु महारानी जो प्रीति की आंखों से उसे देखती रहती थी कभी २ उस के कारण से घबड़ाती थी । इतने बहुत बरस यह पति पत्नी एक संग बड़े प्रेम से रहे थे और पत्नी की यह बड़ी इच्छा थी कि मेरे जीवन भर मेरा प्यारा पति रहे और इस राज्य के भारी कार्य्यों में मेरा सहायक रहे क्योंकि वह उस में हर साल नये गुण और भलाइयां देखती रही परन्तु ईश्वर की इच्छा और थी । दो अठवारे से पति को नींद न आती थी और न उस को भूख लगती थी और हड्डियों में पीड़ा होती थी ।

इतवार को जो दिसम्बर का आठवां दिन था उस का दुःख बढ़ गया

और आलिस राजकुमारी उस समय जब और सब लोग गिर्जे में गये थे उस के पास बैठी थी और उस की रखवाली करती थी। पिता की इच्छा से उस का पलंग खिड़की के पास रखा गया जहां से बादलों को जो आकाश में घूमते फिरते थे देख सक्ता था। तब उस ने बेटी से कहा कि बाजा बजाके कोई गीत हमारे लिये गाइये। आलिस जानती थी कि कौन २ गीत उस को अच्छे लगते हैं सो उस ने कई एक गीत गाके सुनाये। जब सुना चुकी तब उस ने पिता की ओर दृष्टि किई। वह हाथ जोड़े आंखें बंद किये हुए ऐसा पड़ा रहा कि मानो प्रार्थना करता है। जब देर लों ऐसा रहा तब बेटी ने समझा कि पिता सो गया होगा। जब उस ने आंखें खोलीं तब उस ने पूछा कि क्या आप सो गये थे। पिता ने कहा नहीं बेटी बरन मीठी २ बातें मन में आई थीं।

अद्भुत बात यह थी कि उन दिनों में जब चैन और बिस्राम की सामग्री आलबर्ट को बहुत मिल गई थी तब भी वह बहुत दिन तक जीने की अभिलाषा नहीं करता था। बीमार होने से थोड़े दिन पहिले उस ने महारानी से कहा कि मेरा मन जीवन पर बहुत नहीं लगता। आप तो जीवन को बहुत कुछ समझती हैं परन्तु मेरी समझ में वह कुछ बात नहीं है। यदि मुझ को निश्चय होता कि मेरे सब प्रिय लोग कुशल क्षेम से रहेंगे तो मैं कल मरने के लिये बिलकुल तैयार होता। यह प्रिन्स आलबर्ट का बिचार था कि यदि ईश्वर की इच्छा ऐसी होती तो वह रहने के लिये आनन्दित था और नहीं तो संसार के छोड़ने को तैयार था।

एक दिन उस से डाक्टर ने कहा आसरा है कि आप फिर जल्द भले चंगे हो जायेंगे। उस ने उत्तर दिया कि नहीं साहिब। मैं चंगा न होऊंगा पर यह बात अचानक मुझ पर नहीं आती। मैं मृत्यु के



लिये तैयार हूं । दूसरे समय उस ने किसी से कहा कि यदि मेरा आसरा अब संसार की बातों पर होता तो अब मेरी बड़ी दुर्दशा होती परन्तु मैं ने ईश्वर से मेल किया है । महारानी और उस की पुत्री आलिस उन दिनों में बहुत उस के पास बैठा करतीं और उसे पुस्तकें पढ़के सुनाया करती थीं परन्तु उसे इतना क्लेश था कि सुन्ना कठिन था । महारानी के लिये यह अच्छी बात थी कि रोज अपने राजकार्य्यों को करना पड़ता क्योंकि उस से वह बड़े दुःख को भूल जाती थी तौभी इस बात से बहुत शोकित थी कि अब से इन भारी कामों को अकेला ही करना पड़ेगा क्योंकि वह जो मुझे बहुत सहायता दिया करता था अब मुझ से अलग हुआ जाता है ।

दिसम्बर की चौदहवीं को प्रगट हुआ कि उस का अन्त समय आ पहुंचा है । प्रिन्स आफ वेल्स भी पिता के देखने के लिये बुलाया गया । महारानी के लिये आलबर्ट का पिछला बचन यह था कि मेरी प्यारी छोटी बीबी । तब उस को चूमके उस ने अपने सिर को उस के कांधे पर रक्खा । थोड़ी देर पीछे महारानी ने पूछा कि क्या अपनी छोटी बीबी को पहचानते हैं । उस को पहचानके पति ने सिर झुकाया पर बोल न सका । सो धीरे २ जैसा कोई नींद लेने लगता है उस का प्राण ईश्वर के पास चला गया । बारह बजे के पीछे सेन्टपाल के गिर्जा घर में जो लंडन में सब से बड़ा गिर्जा घर है उस का घंटा हौले २ बजने लगा और नगर के समस्त रहनेवालों को प्रगट हुआ कि एक बड़ा महात्मा और धार्मिक राजकुमार इस संसार से कूंच कर गया है ।

उस की बीमारी के दिनों में आलिस पिता के लिये बहुत बाजा बजाके गीत गाया करती थी । वह गीत जिस से वह अधिक प्रसन्न रहता था इस अर्थ का था—

१ यीशु तू है मेरी आस
आता हूं मैं तेरे पास
रक्त ओ जल जो बहे थे
तेरे छिदे पहलू से
वह अपराध की ओषधि हो
नरक से बचाने को ।

२ खाली हाथ मैं आता हूं
कुछ भी नहीं लाता हूं
नंगा हूं अशुद्ध कंगाल
मुझ लाचार को तू सम्भाल
दे तू मुझे साफ पोशाक
कर तू मेरे दिल को पाक ।

३ अंधा हूं तू कृपा से
अपने दास को आंखें दे
मैला हूं मलीनता का
धो हे यीशु उसे धो
मुझ बलहीन को कृपा से
आत्मिक बल बहुत से दे ।

४ जब तक मेरा रहे दम
जब ही आवे मौत का गम
दिन बिचार का आवे जो
तू ही लेखा लेने को
यीशु मुझे तब बचा
अपनी आड़ में तब छिपा ।

प्रिन्स आलबर्ट बड़ा धर्म्मी जन था । सब लोगों के आगे उस का बोलचाल बहुत ही सादा और निर्दोष था तौभी वह अपनी पवित्रता पर कुछ भरोसा नहीं रखता था । वह भली भांति जानता था कि प्रभु

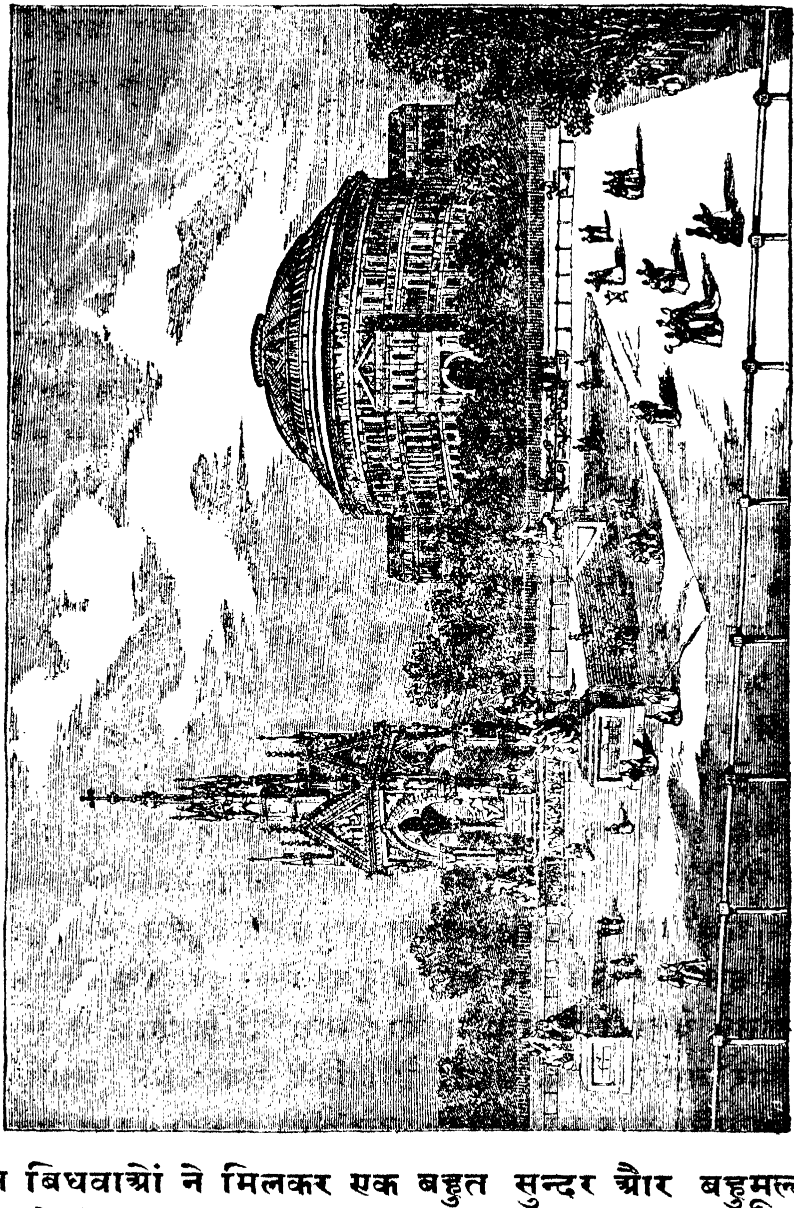
यीशु मसीह मुक्तिदाता है और कि उस को छोड़ और कोई निस्तार का द्वार नहीं है और उस के शरणागत होकर उस के मन में बड़ी शान्ति होती थी।

महारानी के बिधवा होने का वर्णन।

कुछ आश्चर्य्य नहीं कि ऐसे धर्म्मी और प्रेमी और सुचाली पति के वियोग से महारानी का मन चूर हो गया। तौभी वह यह बिचार करती थी कि ईश्वर हमें प्यार करता है और यह बात उस की इच्छा से हुई सो अपने मन को इस भरोसे से धीरज देती थी कि थोड़े दिन में हम उसे फिर स्वर्गधाम में देखेंगे। वह अपने रोते हुए बालकों के साथ घुटने टेककर प्रार्थना करती थी कि हे स्वर्गीय पिता हम सभों को सामर्थ्य दे कि इस शोक के बड़े बोझ को उठा सकें।

अपने शोक करने में वह औरों के क्लेश को भूल नहीं जाती थी बरन अपने को उन के संग दुःख में साझी समझके वह उन की समस्त आपदों में शोक करती थी। आलबर्ट के मरने के थोड़े दिन पीछे एक स्थान में बड़ी बिपत्ति पड़ी क्योंकि किसी कोएले की खान में ऊपर की मट्टी गिरी और दो सौ मजूर जो नीचे काम करते थे दबकर मर गये। जब यह सन्देश महारानी को पहुंचा तब उन के घरानों पर दया करके उस ने तुरन्त तार की चिट्ठियां भेजीं इस अर्थ की कि महारानी इन सब बेचारी बिधवाओं और माताओं के शोक के संग आप भी तन और मन से शोक करती है। फिर जब धर्म्मी लोगों ने इन दुःखी बिधवाओं और माताओं के लिये चंदा एकट्ठा किया तब महारानी ने निज रुपयों में से दो हजार रुपये दे दिये।

जब प्रिन्स आलबर्ट की बर्षी हुई तब इङ्गलिस्तान की बहुत सी



प्रिन्स आलबर्ट का स्मारक।

कुलीन बिधवाओं ने मिलकर एक बहुत सुन्दर और बहुमूल्य धर्म्म-
पुस्तक तैयार करवाई और महारानी को भेंट दिई। इस स्मरण

और प्रेम के लक्षण से महारानी बहुत प्रसन्न हुई और देनेहारियों को यों लिख भेजा कि हे मेरी बहिनो दुःख में आप लोगों के प्रेम का उत्तम दान पाकर मैं आप लोगों का बहुत धन्य मानती हूं। ईश्वर करे कि जैसा मेरे बड़े क्लेश में मेरे स्वर्गीय पिता से मुझे बहुत दिलासा मिला है वैसा ही आप लोगों को मिला करे।

प्रिन्स आलबर्ट के मरने के पीछे कई बरस लों विक्टोरिया एकान्त में रही और जब सन ईसवी १८६३ में उस के बड़े बेटे प्रिन्स आफ वेल्स का बिवाह हुआ तब भी महारानी उदासी का काला कपड़ा पहिनके अपनी चौकी पर एकान्त में बैठकर ऊपर से देख रही थी और आनन्द करनेहारों के बीच में न आई।

उन शोक के दिनों में राजकुमारी आलिस माता की विशेष दिलासा देनेवाली थी पर जब उस का भी बिवाह हो गया तब उस ने अपनी माता को यों लिख भेजा कि हे प्राणप्यारी जितनी उजली और उत्तम बातें आप के हाथ में रहें उन को तन और मन से थांभे रहिये। उन को पालिये क्योंकि ये चिन्ह उस अति उत्तम आनन्द के हैं जो हम को कोई दिन मिलनेवाला है। बहुत बातों में ईश्वर का प्रेम अब आप पर प्रगट है और जितना अधिक उस प्रेम को पहचानोगी और उस का धन्य मानोगी उतना ही अधिक आप उस आनेहारी शान्ति के लिये तैयार होंगी। दिन रात ईश्वर के हाथ को पकड़े रहिये। कभी उसे न छोड़िये। मैं सोचती हूं कि यह मेरे जीवन की जड़ और सामर्थ्य है और ज्यों २ दिन बढ़ते जाते हैं त्यों २ मैं अधिक ऐसा मानती हूं।

परन्तु जब विक्टोरिया इस दुःख से शोक करती थी तब इस बात को स्मरण करती थी कि मैं बड़े देश की महारानी हूं और वह अपने राजकार्य्यों को बराबर करती जाती थी क्योंकि सोचती थी कि ईश्वर ने मुझे यह काम दिया है और ईश्वर के लिये उसे शक्ति भर करना

उचित है । उस का एक बड़ा मंत्री कहता है कि महारानी हर एक भारी काम को बूझती जाती है हर एक राजपत्र को जो किसी विलायत में भेजा जाता अथवा किसी विलायत से आता है इन सभों को जांचा करती है । सब सर्कारी काम उस के हस्ताक्षर से चलता है और जब लों वह उस का अर्थ न समझे वह किसी कागज पर हस्ताक्षर नहीं करती है ।

महारानी के बेटे और बेटियों का वृत्तान्त ।

१—राजकुमारी विक्टोरिया उस की पहिली पुत्री थी और अपनी माता के नाम से प्रसिद्ध थी । माता उसे घर में प्रेम के नाम से विकी कहती थी । जब वह छोटी थी तब ही माता के सिखाने से पढ़ने लिखने लगी और बहुत ज्ञानी और सुस्वभाव और अपनी माता की बहुत प्यारी थी । लोग उसे प्रिन्सेस रायल कहते थे । जब वह स्यानी हुई तब जर्मन देश से एक राजकुमार आया जो उसे देखकर उस पर बहुत मोहित हुआ । यह वही है जो अब जर्मन देश का महाराजा है । सो उन दोनों की मंगनी हुई और विवाह का दिन २५वीं जनवरी सन् १८५८ ठहराया गया और उस समय वह लंडन का राजभवन जो बकिङ्हाम नाम से प्रसिद्ध है न्योतहरियों से भरा था । इस बीच में राजकुमारी अकस्मात् बड़ी जोखिम में पड़ी । वह किसी मित्र को चिट्ठी लिख चुकी थी और चिट्ठी पर लाख गरम करके छाप लगा रही थी कि उस की आस्तीन बत्ती में लग गई और जलने लगी । आनन्द की बात है कि उस समय उस की बहिन और दो सिखलानेवाली उस कोठरी में उस के संग थीं सो उन्हों ने आग को देखकर झट फर्श उठाके राजकुमारी पर लपेट दिया और आग बुझ गई । उस की बांह कोहनी से लेके कंधे तक जल गई बरन उस का प्राण बच गया । बांह बहुत दुखती थी तौभी वह न चिल्लाई बरन उस ने आज्ञा दिई कि माता को मत डराओ



प्रिन्सेस रायल ।

पहिले पिता को संदेश दे देओ। पीछे को वह सोचने लगी कि जो माता पिता को संदेश मिले तो वे बहुत घबड़ा जायेंगे सो दूसरे के हाथ से

उन्हें चिट्ठी लिखवाई और अपने बायें हाथ से आप उस पर दस्तखत किया जिस्तें वे जानें कि बहुत नहीं जली ।

जब बिवाह का दिन आया तब तीस राजकुमार और राजकुमारी और तीन सौ रईस गिर्जा घर में एकट्ठे हुए । उस समय दुल्हिन के मन में एक शोक की बात यह थी कि अब मुझे परदेश में जाना और अपने प्रिय घर के लोगों से अलग रहना पड़ा । वह हिन्द की स्त्रियों के समान छः महीने ससुराल और छः महीने मैके में रह नहीं सक्ती थी तौभी उस को बहुत अच्छा बर मिला ।

इन दोनों के आठ बालक उत्पन्न हुए जिन में से दो मर गये । प्रिन्सेस विक्टोरिया अपनी माता के अच्छे निदर्शन पर बहुत चलती थी वह अपने बच्चों की भलाई की बहुत चिन्ता करती थी । उस का यह दस्तूर था कि वे सवेरे पढ़ाये जाते थे तब आप उन के पास बैठके सुनती और उन को उभाड़ती रहती थी । एक दिन जब कोई मेम साहिब उस की भेंट करने के लिये आई वह इस बात से आश्चर्य्यित हुई कि वह आप एक चौकी को उठाके कमरे की दूसरी ओर ले गई तब वह बोली कि आप ने उस के उठाने के लिये सेवक को क्यों न बुलाया । विक्टोरिया ने उत्तर दिया कि आप जानती हैं कि मेरी माता एक बहुत बड़े राज्य की महारानी है तौभी मैं ने उस को देखा है कि वह अपने लड़कों के बिठाने के लिये अपने हाथों में एक एक चौकी को लाके रखती थी और मैं ने उसे उन लड़कों के बस्त्रों को अल्मारी में रखते देखा है । क्या मैं ऐसे अच्छे निदर्शन से डरूं । उस का पति भी हाथ के परिश्रम को तुच्छ न जानता था बरन उस ने भी छापेखाने के काम को सीख लिया था और उस के बड़े बेटे ने पुस्तकों की जिल्द बनाने का काम सीखा था ।

जब जर्मन का महाराजा मर गया तब प्रिन्सेस रायल का पति उस की सन्ती में गद्दी पर बैठाया गया पर उस का राज्य थोड़े दिन

के लिये रहा क्योंकि सन् ईसवी १८८८ में वह भी मर गया और उस का जेठा बेटा विलियम दूसरे के नाम से गद्दी पर बैठाया गया।

प्रिन्स आफ वेल्स का वृत्तान्त।



प्रिन्स आफ वेल्स।

२—महारानी के पीछे आसरा है कि उस का पहिला पुत्र जिस का नाम आलबर्ट इडवर्ड प्रिन्स आफ वेल्स है उस की सन्ती सिंहासन

पर बैठेगा । वह सन् ईसवी १८४१ के नवीं नवम्बर को उत्पन्न हुआ । ऊपर वर्णन हुआ कि उस के बचपन में माता ने कैसी अच्छी रीति से उसे शिक्षा दिई । लड़कपन में वह कुछ दिन लों इडिन्बर्ग नगर के हाई स्कूल में और पीछे आक्सफोर्ड और केम्बृज के कालेज में पढ़ता रहा । सन् ईसवी १८६३ के दसवीं मार्च को उस का बिवाह डेन्मार्क देश की राजकुमारी एलेक्जेन्ड्रा के साथ हुआ ।



प्रिन्सेस आफ वेलस ।

यह राजकुमारी बहुत सुन्दर है और उस के इङ्गलिस्तान में आने पर समस्त देश में बड़ी धूमधाम हुई क्योंकि लोग कहते थे कि कोई दिन यह रूपवती कन्या हमारी महारानी होगी । सो जिस दिन वह लंडन में पहुंची हजारों लोग सड़कों में उस का मुख देखने के लिये खड़े थे । जब दुल्हिन हुई तब सब लोग उसे प्यार करते थे ।

प्रिन्स आफ वेलस के एलेक्जेन्ड्रा से पांच बालक उत्पन्न हुए अर्थात् अलबर्ट विक्टर जो सन् ईसवी १८६४ के आठवीं जनवरी को उत्पन्न हुआ

जार्ज फ्रेड्रिक.......... १८६५ तीसरी जून को हुआ ।
लुइसा विक्टोरिया ...... १८६७ २०वीं फर्वरी को हुई ।
विक्टोरिया एलेक्जेन्ड्रा.... १८६८ ६वीं जुलाई को हुई ।
माड चार्लट .... १८६९ २६वीं नवम्बर को हुई ।

विशेषकर प्रिन्स आफ वेलस के घराने के लिये दो भवन बनाये गये एक लंडन में और दूसरा दिहात में । सन् ईसवी १८७२ के अन्त में प्रिन्स आफ वेलस बहुत रोगी हो गया पर उस का प्राण बहुत बच गया । वह किसी के घर में भेंट करने के लिये गया था और लौटने पर वह और एक कुलीन जन और एक सईस जो वहां उस के साथ गये थे तीनों तप से बहुत रोगी हुए । वह कुलीन जन शीघ्र मर गया और ऐसा देख पड़ता था कि प्रिन्स आफ वेलस भी किसी रीति से न बचेगा । उस की पत्नी बड़े प्रेम से बीमारदारी करती थी और प्रिन्सेस आलिस उस को बहुत सहायता देती थी । महारानी भी उस की रक्षा करने के लिये आती थी ।

इतने में इस बात का संदेश देश में फैला और लोग बहुत उदास हुए । हर कहीं धर्म्मी जन प्रार्थना करते थे कि उस का प्राण बच जाय । एक दिन वह ऐसा बेहोश हो गया कि किसी को पहचानता न था और जो उस पास बैठे थे वे सोचने लगे कि अब उस का मरण-काल आ पहुंचा है । तौभी ईश्वर के अनुग्रह से तप जाती रही और

उस का बल फिर बढ़ने लगा। सईस के चंगा करने के लिये भी बहुत उपाय किये गये परन्तु कोई बात काम न आई और वह मर गया।

थोड़े दिनों के पीछे लंडन नगर के लोग उसे बड़े आनन्द में देखने लगे। जब वह इतना चंगा हुआ कि अपनी माता और पत्नी के संग गाड़ी में बैठकर गिर्जे में अपनी बड़ी रक्षा के लिये ईश्वर के धन्यवाद करने को जाता था तब पहिले यह ठहराया गया कि केवल महारानी और उस का बंश उस आराधना को करें परन्तु शीघ्र विदित हुआ कि प्रजा भी उस राजकुमार के बचने से बहुत ही आनन्दित हैं सो यह ठहराया गया कि ऐसी आराधना किई जाय जिस में हजारों लोग मिलकर ईश्वर का धन्य मानें। सो उस बड़े गिर्जा घर में जो



सेन्ट पाल्स गिर्जा।

सेन्टपालस केथीड्रल नाम से प्रसिद्ध है । उस समय १३००० प्रधान और रईस और कुलीन और साधारण जन एकट्ठे हुए और एक संग ईश्वर को आराधना करने लगे और विशेषकर यह प्रार्थना किई गई कि हे सर्व शक्तिमान और दयालु परमेश्वर हम तेरे नाम की स्तुति और बड़ाई



प्रिन्स आफ वेल्स का बड़ा बेटा ।

करते हैं इस लिये कि तू ने अपने दास आलबर्ट इडवर्ड प्रिन्स आफ वेलस पर भारी रोग के समय में दया किई और उसे दुःख के बिसतर से भला चंगा फिर उठाया है । प्रार्थना कर जब वे फिर राजभवन में लौट गये तब उन के आगे एक बड़ी भीड़ उन लोगों की एकट्ठी हुई जो राजकुमार के चंगे होने से बहुत आनन्दित थी सो वह और महारानी थोड़ी देर के लिये उसारे में खड़े हो गये जिस्तें सब लोग उन्हें देख लेवें ।

सन् १८७५ और १८७६ ईसवी में हिन्द के राजा और प्रधान लोग बहुत ही मगन हुए क्योंकि प्रिन्स आफ वेलस ने यहां आकर समस्त हिन्द देश की सैर किई और हर कहीं प्रजा उस के आने से मगन हुई । बहुत से नगरों में बड़े २ दर्बार किये गये और हिन्द के राजा लोग उसे सलाम करने को एकट्ठे हुए ।

प्रिन्स आफ वेलस ने सान्ड्रीन्धाम नाम एक भूमि को जिस में अच्छा घर था मोल लिया और वह बहुत वहां रहता और जमीन्दारी करने और अच्छे गाय बैल और भेड़ियों के पालने में अपने मन को बहलाता है । वह देश की भलाई की बहुत चिन्ता करता है और बहुत दौड़धूप उठाके जहां कहीं उस के जाने से प्रजा को लाभ होवे बहुत जाया करता है ।

जिस प्रकार उस के पिता ने उसे लड़कपन में भली भांति शिक्षा दिई थी वैसे ही वह भी अपने पुत्रों की भलाई को ढूंढ़ता है । उस ने सोचा कि यदि ये दो राजकुमार लंडन नगर में रहा करें तो उन के बिगड़ जाने का बहुत अंदेशा है क्योंकि उन के पास फुसलानेहारे अवश्य आवेंगे । सो उन्हें समुद्र पर भेजना भला है । सो उन दोनों को एक शिक्षक के हाथ में सौंपकर उस ने उन्हें एक सर्कारी युद्ध के जहाज पर भेज दिया जिस्तें नाविक के काम को सीखें । जब जहाज समुद्र पर चलता था वे नाविकों के समान कप्तान की आज्ञा में रहते थे



राजकुमारों का जहाज का काम सीखना ।

परन्तु जब वे किसी कोल में पहुंचते थे और स्थल पर उतरते थे तब लोग उन्हें राजकुमार जानते थे । ६७ पृष्ठ में एक चित्र है जिस में वे रस्सी जोड़ने का काम सीखते हैं । अपने जहाज में इधर उधर चलकर उन्हों ने बहुत से परदेशों को देखा और जो कुछ देखने में आया उन्हों ने एक पुस्तक में लिखा और वह पुस्तक पीछे छापी भी गई ।

इन दोनों में जो बड़ा था अर्थात् प्रिन्स आलबर्ट विक्टर वही था जिस के विषय में लोग यह सोचते थे कि प्रिन्स आफ वेल्स के मरने के पीछे किसी दिन इङ्गलिस्तान और हिन्द आदि देशों का महाराजा होगा । परन्तु मनुष्य के जीवन का कुछ ठिकाना नहीं है । वह बादल की छाया के समान आता और फिर चला जाता है । यही दशा प्रिन्स आलबर्ट विक्टर की भी हुई । जब वह २८ बरस की अवस्था में पहुंचा तब उस के बड़े आनन्द के दिन देख पड़ते थे । उस को ड्यूक आफ क्लारेंस की पदवी दिई गई और प्रिन्सेस मे के संग जो बहुत ही उत्तम राजकन्या थी उस की मंगनी हुई । बहुत से मित्रों ने उस के बिवाह की तैयारी किई थी और आनन्द के अच्छे दान उस के पास भेजते थे पर इतने में वह रोगी हुआ और सन् १८९२ ईसवी के १४वीं जनवरी को मर गया । धन्य वह मनुष्य है जो सदा प्रस्थान करजाने के लिये तैयार है क्योंकि वह नहीं जानता कि कब चलना पड़ेगा ।

उस का भाई प्रिन्स जार्ज नाविक का काम करता रहा और आज-कल वह एक सर्कारी युद्ध के जहाज का अध्यक्ष है ।

३—प्रिन्सेस आलिस का वृत्तान्त ।

यह महारानी की दूसरी बेटी है जो सन् १८४३ ईसवी के २५वीं अप्रेल को उत्पन्न हुई । बालकपन में पिता ने कहा कि यह बहुत अच्छी और आनन्दी पुत्री है और माता ने उत्तर दिया हां वह बहुत अहंकारी बच्चा भी है । जब वह कुछ बड़ी होने लगी तब खेलकूद दौड़ने फिरने से बहुत मगन रहती थी । ज्ञान और विद्या में वह अपनी बड़ी बहिन के बराबर न थी तौभी वह महारानी की सब बेटियों में सब से प्रसिद्ध और लोगों को प्रिय हो गई क्योंकि सब देखते थे कि उस का स्वभाव बहुत प्रेमी और दयालु है और कि वह बहुत ही परस्वार्थी है । ऊपर वर्णन हुआ कि पिता के रोग के दिनों में विशेषकर आलिस उस की रखवाली करती थी । उस समय से उस का स्वभाव बहुत बदल गया । पहिले वह लड़की सी निश्चिन्त रहती थी बरन तब से ऐसी स्त्री बन गई जो औरों के लिये बहुत चिन्ता करती है ।

सन् १८६२ ईसवी के १ली जुलाई को उस का बिवाह हेस्स देश के प्रिन्स लुइस से किया गया और वह दुल्हे के देश में जाकर रहने लगी । पीछे उस ने अपनी माता को चिट्ठी में यों लिख भेजा कि यदि मैं कहूं कि अपने पति को बहुत प्यार करती हूं तो यह बस नहीं है । मेरा प्यार उस की ओर हर दिन और हर घड़ी बढ़ता जाता है और वह भी अनेक भांति से अपनी प्रीति मुझ पर प्रगट करता जाता है । मैं सचमुच बहुत ही आनन्दित हूं ।

तौभी अपनी मगनता में स्मरण करती थी कि मेरी माता के लिये यह सन्ताप के दिन हैं सो दूसरी चिट्ठी में यों लिख भेजा था कि मेरी प्यारी माता मैं आप को बहुत ही प्यार करती हूं और यदि अपने आनन्द के कुछ घटाने से आप को आनन्दित कर सक्ती तो तन और



प्रिन्सेस आलिस ।

मन से योंही करती। आप के लिये सदा मेरी यही प्रार्थना है कि ईश्वर आप को दिलासा देवे।

उस हिन्दी पुस्तक में जो कुलीन स्त्रीकीर्ति नाम से प्रसिद्ध है आलिस की दया और अनुग्रह और परस्वार्थ का भी वृत्तान्त है। आप लोग उसे देखके पढ़िये। वह अपने बच्चों के पालने पोसने और अपने हाथों से उन के वस्त्र बनाने में बहुत मगन थी और अपनी माता के दस्तूर के अनुसार वह कङ्गाल लोगों के पास जाने और उन की सहायता करने में प्रसन्न रहती थी। जब स्वदेश और फ्रांस देश में बड़ी भारी लड़ाई हुई तब वह नगर जिस में वह रहती थी घायल और अधमुए सिपाहियों से भरा था आलिस ने उन बेचारों पर बड़ी दया किई। वह बहुतों के पास रक्षक भेजती और आप भी उन की दशा देखने के लिये उन के पास अस्पतालों में जाया करती थी।

परन्तु उस पर बड़ी बिपत्तें आनेवाली थीं। उस का पति सेनापति था और दो युद्धों में उसे जाना पड़ा। पत्नी यह न जानती थी कि किस दिन यह सन्देश मुझे मिलेगा कि पति किसी लड़ाई में मारा गया है। सन् १८७३ ईसवी में उस पर एक बड़ी आपद यह पड़ी कि उस के दो पुत्र घर के ऊपरवाले कोठे पर खेलते थे और अकस्मात उन में जो छोटा था एक ऊंची खिड़की से गिर पड़ा और चकनाचूर हो गया। सन् १८७८ ईसवी में घर में एक बड़ा रोग उत्पन्न हुआ और एक संग पति और पांच बालक बीमार हो गये। आलिस बड़ी प्रीति और धैर्य्य से उन सभों की रक्षा करती थी। उस की एक बेटी मर गई और सब चंगे हो गये। तब माता को भी वही बीमारी हुई। डाक्टरों ने बहुत परिश्रम किया पर कोई उपाय काम न आया और आलिस अपनी ३६वीं बरस की अवस्था में मर गई। उस के मुंह से जो पिछला शब्द निकला वह यह था कि प्यारे पिता। महारानी के

लड़केबालों में से आलिस सब से पहिले मर गई । उस का स्वभाव ऐसा धर्म्मी और प्रेमी और हितकारी था कि बहुत बरस लों अपने देश में और अपने पति के देश में भी लोग उस के अच्छे २ गुणों को गाते रहेंगे ।

४—प्रिन्स आल्फ्रेड़ का वृत्तान्त ।

प्रिन्स आल्फ्रेड़ महारानी का दूसरा बेटा है जो पीछे ड्यूक आफ एडिनबर्ग नाम से विख्यात हुआ । उस ने जहाज पर सवार होके नाविक का काम सीखा और पीछे कितने बड़े युद्ध के जहाज उस के अधिकार में थे । सन् १८६९ और १८७० ईसवी में उस ने हिन्दुस्तान के कितने नगरों की सैर किई । सन् १८७४ में उस की राजकन्या मेरी से जो रूस देश के महाराजा की पुत्री थी बिवाह हुआ । उन के एक बेटा और चार बेटियां उत्पन्न हुईं ।

५—और राजकुमारों और राजकन्याओं का वृत्तान्त ।

प्रिन्सेस हेलीना जो महारानी की तीसरी बेटी है अपनी बीस बरस की अवस्था में जर्मन देश के एक राजकुमार के संग जिस का नाम आगस्टनबर्ग का प्रिन्स कृस्तियन था बिवाह हुआ और उन के दो बेटे और दो बेटियां उत्पन्न हुईं ।

प्रिन्सेस लुइस जो महारानी की चौथी बेटी है सन १८७१ में मार-क्विस आफ लोर्न की पत्नी हुई । उन के लड़केबाले नहीं हैं ।

प्रिन्स आर्थर महारानी का तीसरा बेटा है जो पीछे ड्यूक आफ कानाट नाम से प्रसिद्ध हुआ । उस ने सेनापति का काम सीखा और



ड्यूक आफ कनाट ।

और उस की पत्नी ।

कई बरस लों हिन्दुस्तान में रहकर बंबई की सेना का शासन किया। सन् १८७९ ईसवी में उस का प्रिन्सस लुइस के साथ जो प्रुसिया देश

की राजकन्या से विवाह हुआ। उन के एक बेटा और दो बेटियां उत्पन्न हुईं।



प्रिन्स लिओपोल्ड ।

प्रिन्स लिओपोलड महारानी का चौथा बेटा था। उस का नाम पीछे से ड्यूक आफ आलबनी प्रसिद्ध हुआ । स्वभाव में और ज्ञान और विद्या के प्राप्त करने में वह बहुत अपने पिता के सदृश था । बचपन से वह कुछ बलहीन रहा और कई बार ऐसा रोगी हुआ कि लोग उस के जीने का आसरा न रखते थे तौभी वह एकतीस बरस की अवस्था लों जीता रहा । सन् १८८२ ईसवी में उस का वालडेक देश की हलीना नाम राजकन्या के संग बिवाह हुआ और उन के एक बेटा और एक बेटी उत्पन्न हुई । सन् १८८४ ईसवी में जब उस को कुछ कमजोरी हुई वह हवा खाने के लिये फ्रांस देश में चला गया। वहां अकस्मात उस का पांव एक दिन किसी सीढ़ी से फिसल गया और उस के घुटने में चोट लगी । किसी ने इस चोट की कुछ चिन्ता न किई बरन रात के समय लिओपोलड बिलकुल बेहोश हो गया और सबेरे वह मर गया ।



प्रिन्सस बीआट्रीस ।

प्रिन्सस बीआट्रीस महारानी की पांचवीं और पिछली बेटी है और माता के बड़े सन्ताप के दिनों में उस से उस को बड़ा दिलासा मिलता था। वह बहुत दिन अर्थात् अपनी २८ बरस की अवस्था लों माता के संग रही और सन् १८८५ ईसवी में उस का बिवाह बाट्टिनबर्ग देश के प्रिन्स हेनरी के साथ हुआ तौभी वह और उस का पति महारानी के भवनों में रहा करते हैं।

विक्टोरिया के राज्य की कई बातें जो हिन्दुस्तान से सम्बंध रखती हैं।

इतने बहुत बरस लों महारानी विक्टोरिया के दिनों में बहुतेरी बड़ी २ बातें देखने में आईं परन्तु इन सब की यहां चर्चा करनी उचित नहीं है। परन्तु तीन बड़ी बातें हुईं जो हिन्दुस्तान से सम्बंध रखती हैं।

सन् १८५८ ईसवी लों ईष्टइण्डिया कम्पनी इस देश में अधिकार रखती थी परन्तु उस साल के पहिली नवम्बर को केनिंग साहिब के द्वारा से जो उस समय लार्ड साहिब था महारानी ने इस बात को प्रचारा कि इस समय से देश का पूरा अधिकार मेरे हाथ में आयेगा और कम्पनी बीच में न आयेगी।

सन् १८७७ ईसवी के पहिली जनवरी को जब लिटन लार्ड साहिब था तब दिल्ली में बड़ा दर्बार किया गया और हिन्द के बड़े २ राजा और रईस लोग वहां एकट्ठे किये गये और उन सभों के आगे विक्टोरिया का यह पद अर्थात् इमप्रस आफ इण्डिया सुनाया गया क्योंकि वह ऐसी महारानी है जिस की आज्ञा में बहुतेरे राजा लोग रहते हैं।

सन् १८८७ ईसवी में विक्टोरिया को राज्य करते हुए पचास बरस हो गये और इस लिये यह बरस युबल का अर्थात् जय जयकार करने का साल प्रसिद्ध हुआ और हां समस्त प्रजा में यह बड़े आनन्द की

बात थी कि ऐसी धर्म्मी और दयालु और सुशील महारानी इतने बरस लों सिंहासन पर बैठी रही और लोगों की प्रार्थना यह है कि बहुत और बरस लों वह राज्य करती रहे। उसी साल के १६वीं फर-वरी को लार्ड डफ़रिन साहिब की आज्ञा से समस्त हिन्दुस्तान में आनन्द के तमाशे किये गये और उस दिन के स्मरण दिलाने के लिये बहुत रुपये ऐसे कामों में जिन से देश को लाभ पहुंचे व्यय किये गये।

अब कई बातों की चर्चा होगी जिन से महारानी के दिनों में हिन्दुस्तान देश को उस के राज्य के होने से लाभ पहुंचा है।

१—पहिला लाभ यह है कि हिन्द के निवासियों में रोग बहुत कम होता है। लोगों को भला चंगा रखने के लिये सर्कार बड़ा यत्न करती है। कितने औषधिविद्या के पढ़ाने के लिये कालिज स्थापन किये गये हैं। बहुत अस्पताल और औषधालय खोल दिये गये हैं और उन में ऐसे भी हैं जो विशेषकर स्त्रियों के लिये हैं। आजकल टीका लगाने के नये दस्तूर से पूर्वकाल की अपेक्षा बहुत कम लोगों को शीतलारोग होता है और उन में जिन को निकलती है बहुत कम मरते हैं। सिंकोना का वृक्ष जिस से क्विनैन औषध बनती है और जो तपरोग के लिये बहुत उपकारी औषध है बहुत स्थानों में उपजाया गया है। लोगों को हैजे से बचाने के लिये बहुत से उपाय किये गये हैं और एक उपाय यह है कि बहुत से बड़े नगरों में किसी नदी का स्वच्छ जल पहुंचाया जाता है ऐसा न हो कि लोग अशुद्ध कुओं के जल को पियें।

२—दूसरा लाभ यह है कि लोग अकालों की विपत्तों से बहुत बचाये जाते हैं। पूर्वकाल में ऐसे बड़े २ अकाल पड़ते थे कि लाखों लोग भूखों मर जाते थे। अब भी कभी ऐसा होता है कि जल कम बरसता परन्तु खेतों को सींचने के लिये बहुतेरे इन्दारे खोदे गये हैं और इस से अच्छा

एक उपाय यह निकला है कि बहुत सी नदियों से पानी लाकर बड़ी २ नहरों के द्वारा से दूर के खेतों में पहुंचाया जाता है। अब देश भर में ६000 मील ऐसी नहरें बन चुकी हैं और २0000 मील के लम्बे उन से निकले हुए हैं। इन से बहुत जमीन सींची जाती और बहुत लोगों के प्राण बच जाते हैं।

३—तीसरा लाभ यह है कि यात्रा करना और व्योपार करना बहुत अधिक बढ़ गया है। जब विक्टोरिया पहिले गद्दी पर बैठी थी उस समय सकल हिन्द देश भर में कहीं रेलवे नहीं बनी थी और पक्की कंकड़ की सड़कें भी बहुत कम बनी थीं। जो कोई यात्रा करने चाहता था सो पैदल वा टट्टू पर सवार होकर चलता था वा पालकी वा डोली में बैठके जाता था। माल लादने के लिये भी बैलगाड़ियां कम थीं और बनजारे लोग बहुत माल को बैलों पर लादके ऐसे ही पहुंचाते थे। जब अकाल किसी देश में पड़ता था और किसी समीप के देश में अन्न बहुत होता था तो उसे जिस देश में अकाल पड़ा है पहुंचा नहीं सक्ते थे और बहुत लोग जो परदेशों में नौकरी चाकरी के लिये नहीं जा सक्ते थे सो स्वदेश में रहके भूखों मरते थे परन्तु अब इतने वर्ष में एक लाख मील सड़कें और १८000 मील रेलवे बन गई हैं और हर साल नई बनती जाती हैं। फिर इस के उपरान्त बड़ी २ नदियां जैसे गंगा वा यमुना पर बड़े २ पुल बांधे गये हैं। कहते हैं कि सन १८८९ ईसवी में उन मुसाफिरों की गिन्ती जो रेलगाड़ियों में सवार होकर कहीं गये थे ११0000000 थी। अब हिन्द के तीर पर सैकड़ों जहाज समुद्र में इधर उधर चलते हैं। पूर्वकाल में जहाज जो इङ्गलिस्तान को जाते थे सो अफ्रीका के दक्षिण होके तीन मास में पहुंचते थे परन्तु अब सुएज के मार्ग होकर बंबई से इङ्गलिस्तान को १५ दिन में पहुंच सक्ते हैं।

४—चौथा लाभ यह है कि आजकल बहुत सी कलें हिन्दुस्तान में बनाई जाती हैं जो भाफ के बल से चलाई जाती हैं और जिन की सहायता से बड़े २ काम बहुत ही शीघ्र किये जाते हैं यहां लों कि बहुत सी वस्तु यहां ऐसी सस्ती बन सक्तीं कि वे और विलायतों में भेजी जातीं और बेची जाती हैं। जैसा कपड़े के बनाने में वह जो अपने हाथ से वेमा को चलाता है सो भाफ के चलाये हुए वेमा के संग कभी बराबरी न कर सकेगा। जब तक हाथवाला एक गज कपड़ा बुनता है तब तक भाफ के कल से बीसों गज कपड़ा बुना जाता है। सन ईसवी १८५४ में पहिला शिल्पघर जिस में कपड़ा भाफ के कलों से बुना जाता था बंबई में बनाया गया। परन्तु आजकल एक सौ ऐसे शिल्पघर हिन्दुस्तान में हैं और उन में ८0000 कारीगर काम करते हैं।

५—पांचवां लाभ यह है कि जब से विक्टोरिया गद्दी पर बैठी है तब से हिन्द देश का धन बहुत बढ़ गया है। ज्ञानी लोग हिसाब करते हैं कि इतने दिनों में चार सौ करोड़ सोना चांदी अधिक देश में आया है और निवासियों का धन इतना अधिक बढ़ गया है परन्तु शोक की बात है कि लोग इस सोने चांदी से बहुत कम लाभ उठाते हैं क्योंकि उसे काम में नहीं लाते बरन उस का बहुधा गहना बनाकर व्यर्थ रक्खे रहते हैं।

६—छठवां लाभ यह है कि अब तार का संदेश एक दिन में विलायत भेजा जा सक्ता है। आजकल समस्त संसार में संदेश इतना जल्दी पहुंच जाता है कि हम स्मरण नहीं करते कि यह बिलकुल नई बात है। विक्टोरिया सन ईसवी १८३७ के २0वीं जून को महारानी हो गई और इस बात का संदेश झट हिन्दुस्तान को भेजा गया होगा तौभी सर्कारी गजट में यह बात २५वीं अगस्त को छापी गई अर्थात् दो

महीने पीछे । जो वह आज के दिन मर जाय तो इस बात की खबर दो घंटे में कलकत्ते में जानी जा सक्ती है । अब हिन्द देश में २२000 मील के तार संदेश पहुंचाने के लिये बने हैं ।

७—सातवां लाभ यह है कि अब समस्त देश में डाक की चिट्ठियां बड़ी जल्दी और सहज से और बहुत सस्ती भेजी जाती हैं । पूर्वकाल के राजाओं के समय में जो कोई चिट्ठी भेजा चाहता था सो उसे किसी दूत वा सेवक के हाथ भेजता था । सर्कार के अगले दिनों में भी बहुत कम चिट्ठियां भेजी जाती थीं परन्तु सन १८५४ में नया प्रबन्ध किया गया और डाकघर और डाक के हरकारे समस्त देश में मुकर्रर किये गये और उस से आज लों चिट्ठियों की गिन्ती बहुत बढ़ गई है ।

८—आठवां लाभ यह है कि अब स्कूल बहुत खुल गये और हिन्द के बहुत लड़के और बहुत लड़कियां भी न केवल ब्राह्मणों के घरों के बरन नीच जातवाले भी पढ़ने लगे हैं । विक्टोरिया के दिनों से पहिले दो चार कालिज खुल गये थे और कितने लोग देशी भाषाओं में पढ़ाते थे परन्तु सन ईसवी १८५४ में वह नई पढ़ने की आज्ञा निकली जिस से पढ़ाने का काम बहुत बढ़ाया गया बरन आज लों बढ़ता जाता है । उस के तीन बर्ष पीछे हिन्द में तीन यूनीवर्सिटी खुल गईं और सन १८९0 में सकल हिन्द देश में १३0000 स्कूल और कालिज हो गये जिन में पैंतीस लाख लड़के और लड़कियां पढ़ाये जाते हैं और अढ़ाई करोड़ रुपये हर साल इस काम में व्यय किये जाते हैं ।

९—नवां लाभ यह है कि छापने का काम बहुत बढ़ाया गया है । सन १८३७ में समस्त देश में ६ वा ७ से अधिक देशी समाचारपत्र नहीं निकलते थे और वह भी थोड़े लोगों के हाथ में आते थे । आजकल करीब ४00 समाचारपत्र निकलते होंगे और उन में कितने भली भांति से लिखे जाते हैं । छापी हुई पुस्तकें भी बहुत अधिक हो गई हैं ।

१०—दसवां लाभ यह है कि सर्कारी इन्तिजाम पहिले की अपेक्षा अब बहुत अच्छा है। राजाओं के दिनों में उन के सेवकों को बहुत कम दरमाहा दिया जाता था और वह भी बराबर न मिला करता था सो तंग होकर प्रजा से जीविका पाते थे और घूस का लेनदेन बहुत था। आजकल थानेदार और तहसीलदार और कोतवाल लोग अधिक पढ़े हुए मुकर्रर हैं और उन को अधिक माहवारी मिलती और वे प्रजा पर उपद्रव कम करते और घूस कम लेते हैं। हां आजकल भी बहुत बुराई है जिस के करनेहारों को सर्कार पकड़ नहीं सक्ती है पर इतनी नहीं है जैसी पूर्वकाल में प्रचलित थी।

हिन्द की पहिली कौंसिल अर्थात् परामर्श लेने की सभा सन् १८५३ ईसवी में लार्ड डलहौसी से खोली गई। लार्ड कानिंग के समय में चार ऐसी कौंसिल थीं और उन में कितने देशी जन बैठते थे। सन् १८५० से पहिले म्युनीसिपालटियां केवल कलकत्ते मंदराज और बंबई में पाई जाती थीं पर सन् १८८३ में ७६१ सकल देश में पाई गईं।

११—ग्यारहवां लाभ यह है कि लोग कुरीतों के सुधारने के लिये कुछ २ तैयार किये जाते हैं। आजकल बहुत ज्ञानी हिन्दू लोग बिचार करते हैं कि छोटी लड़कियों को बिवाह देना बुरी बात है और बिधवाओं को बिवाह करने से रोकना बड़ी हानि की बात है और वे बहुत चाहते हैं कि इन बातों के विषय में सर्कार नई व्यवस्था चलावे। पण्डित विद्यासागर और मालबारी साहिब और दीवान रघुनाथ राव साहिब ने लोगों को इन कुरीतों के विषय में बहुत समझाया है और ऐसे ज्ञानवानों के यत्नों से बहुत लोग इन बातों को सुधारना चाहते हैं। सन् १८५६ में यह आज्ञा दिई गई थी कि यदि कोई बिधवा फिर बिवाह करे तो कोई उसे बर्जित न करे। परन्तु ऐसी बातों में पहिले यह अवश्य है कि साधारण लोगों के बिचार

बदल जायें क्योंकि दो चार लोगों को नई रीति चलाना कठिन है। आजकल हम देखते हैं कि जाति का घमंड बहुत कम देखने में आता है। रेलगाड़ी आदि स्थानों में ब्राह्मण और शूद्र कुशल से पास २ बैठते हैं और कितने ब्राह्मण जो विलायत को देख आये हैं इस यात्रा को पाप नहीं समझते न उस के लिये प्रायश्चित्त करते हैं।

१२—बारहवां लाभ यह है कि हिन्दूधर्म्म में भी कुछ सुधराव होने लगा है। कितने हिन्दू पुराण और उपनिषद की बातों को त्यागकर कहते हैं कि हम केवल वेदों को माना करेंगे बरन वेदों का अर्थ नई रीति से बताने लगे हैं। बहुत लोग विद्या को पाकर वेदों की बातों को त्याग देते हैं और यों धर्म्म की बातों की बहुत चर्चा समस्त हिन्द में किई जाती है। फिर बहुत से नये २ मत जैसे ब्राह्मोसमाज आर्य्य-समाज और साधारणसमाज फैलने लगे और लोग अधिक अपने २ लिये इन बातों को तौलने और जांचने लगे हैं। विक्टोरिया के राज्य में मसीह के निस्तार का उपदेश हिन्द में बहुत दिया गया है और जहां आधे लाख मसीही थे अब छः लाख हैं और प्रतिदिन यह गिन्ती बढ़ती जाती है।

भलाई के बहुत काम बाकी हैं।

विक्टोरिया के राज्य में देश की बहुत उन्नति हो चुकी है तौभी कोई इस से सन्तुष्ट न रहे। और बहुत सी बढ़ती हो सक्ती और ईश्वर की कृपा से होवेगी भी। आजकल निवासियों की गिन्ती बहुत बढ़ती जाती है और यदि देश की उन्नति न किई जाये तो इतने लोग कहां से भोजन पायेंगे। अगले दिनों में बार २ बड़े अकाल पड़ते थे। लोग आपस में बड़ी भारी लड़ाइयां करते थे मरी हैजा आदि रोग देश में

बहुत फैलते थे और इन आपदों से अगणित लोग हर बरस मरते थे। आजकल सर्कार के यत्नों से यह आपदायें बहुत कम इस देश को क्लेश देती हैं सो लोगों की गिन्ती बहुत बढ़ती जाती है तौभी पूर्व-काल की अपेक्षा लोग अधिक सुख चैन से रहते हैं ।

परन्तु हिन्दुओं में कितनी कुरीतें हैं जिन के दूर करने से देश का बहुत लाभ होता । आजकल अगणित लोग हाथ के परिश्रम को तुच्छ जानते हैं और किसी प्रकार की नौकरी के खोज में मारे २ फिरते हैं परन्तु दस में से केवल दो एक को नौकरी मिल सक्ती और बाकी बेकाम हाथ पर हाथ धरे हुए बैठे रहते हैं । चाहिये कि पढ़े लिखे आदमी भी हाथ के परिश्रम से न डरें क्योंकि पण्डिताई सभों का काम न हो सकेगी ।

एक और बात कि जिस से हिन्दुस्तान को लाभ होगा यह है कि दिहात में स्कूल अधिक फैल जायें । उस देश में जहां ज्ञान भली भांति फैल गया तहां चाहिये कि छः जनों में एक जन घट बढ़ के हिसाब से स्कूल में पढ़ता होवे । परन्तु सन् १८८१ ईसवी की लोकगिन्ती से जाना जाता है कि हिन्दुस्तान के पुरुषों और लड़कों में ४२ जन के पीछे एक जन स्कूल में पढ़ता था और हर ८५८ स्त्री और लड़की के पीछे एक स्त्री पढ़ाई जाती थी । जब लों ऐसी कम पढ़ाई रहती तब लों अज्ञानता बहुत प्रबल रहेगी । फिर हिन्द में स्त्रियों की दुर्दशा है । चाहिये कि ऐसे उपाय ढूंढे जायें जिन से उन को ऐसा सुख चैन प्राप्त हो जैसा कि मसीही देशों में बहुधा स्त्रियों को मिलता है । फिर जाति के बंधन को तोड़ना है क्योंकि अब लोग उस से बहुत जकड़े हुए हैं । फिर साधारण लोग काठ पाषाण की पूजा की जंजीर से बंधे हुए हैं । अवश्य है कि उन को छुटकारा मिले जिस्तें वे अपने सृजनहार और पालनहार की आराधना करें । ऐसी नई २ रीतें जब

हिन्दुस्तान में प्रचलित हो जायें तो देश की कैसी बड़ी भलाई हो जायेगी ।

हिन्दुओं में एक और कुरीति यह है कि धर्म्मकार्य्य करने का उन्हें साहस नहीं है । जब जानते हैं कि कोई पुराना दस्तूर हानिकारक है तो मुंह से उस की बहुत निन्दा करेंगे परन्तु उस को नहीं छोड़ेंगे ऐसा न हो कि घर का पुरोहित वा घर की स्त्रियां उस के त्यागने से बुरा मानें । बहुत हिन्दू लोग जानते हैं कि पत्थर का पूजना कुरीति है और छोटे बच्चों का बिवाह करना कुरीति है और बिवाह करने में बहुत व्यय करना कुरीति है और स्त्रियों को अज्ञानता की दशा में रखना कुरीति है तौभी कौन इन को त्यागता है । लोग डर के मारे परम्परा की लीकों पर चलते रहते हैं । सोचिये कि यदि सब हिन्दू बीरता से सत्य के पीछे हो लेते तो देश की कैसी बड़ी उन्नति हो जाती ।

महारानी के स्वभाव का वर्णन ।

उचित है कि जो लोग महारानी के इस वृत्तान्त को पढ़ते हैं सो अपने लाभ के लिये उस से शिक्षा को प्राप्त करें । विशेषकर हिन्द के समस्त राजाओं और रानियों और कुलीन पुरुष स्त्रियों के लिये उस ने बहुत अच्छा निदर्शन दिया है और आसरा है कि उन में से बहुत से उस ही की लीक पर चलके अपने २ कार्य्यों को सुधारेंगे ।

इस बात को स्मरण करना योग्य है कि सिंहासन पर बैठनेहारों की जगह बहुत कठिनता और जोखिम की जगह है । हिन्दुओं की एक कहावत है कि जप तप का फल सिंहासन है और सिंहासन का फल नरक । यह कहना सत्य नहीं है तौभी इस से प्रगट है कि लोगों

का अपने राजाओं के विषय कैसा विचार होता है। यह देखने में आता है कि बहुत से राजकुमार अपनी बड़ाई के घमंड से फूलकर परिश्रम करना त्याग देते और सुस्ती और सुखबिलास में दिन बिताने लगते हैं और अपने कर्तव्य की कुछ भी चिन्ता नहीं करते और यों शीघ्र नाश हो जाते हैं। तो कितना आदरसन्मान उन बड़े लोगों को देना चाहिये जो इन परीक्षाओं से बचते हैं और माना आग के बीच में से कुशलक्षेम से निकलते हैं। महारानी ने अपनी जवानी के दिनों का यों वर्णन किया है कि बिचार करो कि जब अठारह बरस की लड़की एकाएक गद्दी पर बैठाई जाय और उस के पास पति न हो जो उस की अगुवाई और रक्षा करे तो उस की कैसी कठिन दशा है। वह माना बड़ी से बड़ी परीक्षा में डाली जाय और यदि उस का स्वभाव बिगड़ न जाय तो बड़े आश्चर्य्य की बात है।

ऊपर के वृत्तान्त से जाना जाता कि विक्टोरिया अद्भुत रीति से इन समस्त जोखिमों से बच गई और इस बात में हम उस की बड़ी प्रशंसा करते हैं क्योंकि वह अपने कर्तव्य की बड़ी चिन्ता करती थी और जो कुछ उचित समझती थी बड़े साहस से उस काम को उठाती थी। अब हम महारानी के कितने एक गुणों की चर्चा करते हैं जो और बड़े लोगों के निदर्शन करने योग्य हैं।

उस का पहिला गुण यह है कि उस में नियम पालन और सच्चाई बहुत है। जब वह कहती है कि मैं दस बजे अमुक स्थान पर आऊंगी तो न आगे न पीछे बरन दस बजे वह वहां आती है। जो वह यथा-क्रम और ठीक समय पर हर एक काम को न करती तो इतना बहुत राज्य कार्य कभी पूरा न कर सकती। यह एक बात है जिस में हिन्द के रईस बहुत दोषी हैं। रेलवे के द्वारा से उन को आजकल इस बात में अच्छी शिक्षा दिई जाती है तौभी उन्हें बहुत और चिताना अवश्य है।

दूसरा गुण यह है कि वह सदा अपने अवश्य कर्तव्यों की चिन्ता करती रहती है । जहां कहीं वह जाया करती तहां यह सोचा करती है कि मैं देश की अथवा प्रजा की भलाई के लिये क्या कर सकूंगी । उन दिनों में भी जब पति के बियोग से अत्यन्त बिलाप करती थी तैाभी उस ने राज्य कार्य्य का त्याग नहीं किया । राज्य के बड़े मंत्रियों में से कोई उसे अधिक और कोई कम प्रसन्न है तैाभी सर्कारी कार्य्यों के करने में वह उन में भेद नहीं रखती है और सब कुछ महा राज-सभा की अर्थात पार्लीमेंट की इच्छानुसार करती जाती है ।

तीसरा गुण यह है कि उस ने बहुत अच्छी रीति से अपने लड़के और लड़कियों का पाला पोसा । इस में बड़ी चतुराई की बात है जब माता पिता अपने बालकों का ऐसी शिक्षा दे सक्ते कि पीछे उन के कर्म्मों से लज्जित न होवें क्योंकि दुष्ट बालकों से जीवन भर का दुःख बना रहता है । अपने बालकों के अनुशासन करने में महारानी पांच बातों की चिन्ता किया करती थी (१) उन्हें सादा भोजन खिलाती थी (२) उन्हें बाहर बहुत हवा खाने का और खेलने का भेजा करती थी (३) उन्हें अपने हाथ से परिश्रम करना सिखाती थी (४) उन्हें अपनी पुस्तकों से और पाठों से निश्चिन्त न होने देती थी (५) उन्हें शक्ति भर कुसंगति से बचाया करती थी । हिन्द के माता पिता इन पांचों बातों की बहुत कम चिन्ता करते हैं ।

चैाथा गुण यह है कि उस में हित बहुत है । वह अपनी प्रजा के दुःख में दुखी और सुख में सुखी है । वह बहुत चाहती है कि अपने देश को लड़ाई के कष्टों से बचाये रक्खे । कई बार जब लड़ाई होने-वाली थी तब विक्टोरिया के यत्नों से वह दूर किई गई थी । वह देश में प्रेम बढ़ाने का बहुत उपाय करती है । वह हर एक उपायों से जो प्रजा की भलाई के लिये किये जाते हैं आप बहुत मगन होती है ।

जो बड़े पद रखनेवाले हैं सो औरों के लाभ के लिये बहुत कर सक्ते हैं क्योंकि उन की शक्ति बहुत है और उन के जीवन का प्रभाव बहुत है। महारानी इस बात को जानती और चाहती कि मेरे जीवन से बहुतेरों की भलाई प्राप्त हो। जब वह प्रिन्स आलबर्ट के मरने से बहुत शोक करती थी तब उस की बेटी आलिस ने माता को यों लिख भेजा कि आप को निरास हो जाना उचित नहीं है क्योंकि आप को वही बात बाकी रही जिस से पिता बहुत आनन्दित था कि राजा लोग प्रजा को सुख चैन देने के लिये बहुत कुछ दे सक्ते हैं। सो आप जो अपने लिये न जीवें तो औरों के लिये जीना चाहिये।

उस का पांचवां गुण यह है कि उस का स्वभाव बहुत कोमल और दयालु है उस की कोमलता अपने सेवकों की ओर बहुत प्रगट होती जाती है। उन पुस्तकों में जो उस के हाथ से लिखी गईं सेवकों की बहुत चर्चा प्रेम सहित है। वह अपने सेवकों को बदलने न चाहती थी और जब उन में से किसी को कुछ क्लेश मिलता था तब वह उन के संग शोक करती थी। नीच लोगों से प्रेम करना अच्छे स्वभाव का लक्षण है। बहुत लोगों का यह दस्तूर है कि बड़े लोगों से बहुत प्रेम की बातें कहते हैं परन्तु अधमों को बहुत ही तुच्छ जानते हैं।

फिर महारानी दरिद्रों और रोगियों पर बहुत दया किया करती है। ऊपर बर्णन हुआ कि जब वह बालमोरल में रहती है तब कैसी रीति से ऐसे लोगों की भलाई करती है। इङ्गलिस्तान के दक्षिण में नेटली नाम घायल किये हुए सिपाहियों के लिये एक अस्पताल है जिस के बनवाने में उस ने और प्रिन्स आलबर्ट ने सहायता दिई। इस का बहुत हित महारानी करती है। अपने बड़े बिलाप के दिनों में भी उस ने वहां के बेचारे सिपाहियों को याद किया और उन के देखने के लिये गई। अस्पताल में पहुंचके वह हर एक सिपाही के

पास जाती और जब किसी को देखती जो अधिक लाचार था तब उस पास ठहरके उस से बातें करती थी। एक बूढ़ा सिपाही जो मरने के समीप था और जो सेना सहित हिन्दुस्तान में गया था जब महारानी से बातें कर चुका था तब बोला कि ईश्वर का बहुत धन्य मानता हूं कि उस ने मुझ पर इतनी कृपा किई कि मैं ने अपनी आंखों से आप के मुंह को देखा है।

कभी २ महारानी जो सिलाई और टांक टूंक आदि स्त्रियों के कामों को भली भांति जानती है अपने हाथों से किसी दरिद्री जन के लिये कोई वस्त्र बनाती है। वह और राजकुमारी बीट्रिस कभी २ नेटली के अस्पताल के लिये रजाई बनाके भेज देती हैं और जिस साल कि मिस्र में लड़ाई थी तब उन्हों ने पांच रजाइयां घायल सिपाहियों के लिये वहां भेजीं। इन में से एक महारानी के हाथ की और एक राजकुमारी बीट्रिस के और तीन उन की सहेलियों के हाथ की बनाई हुई थीं परन्तु महारानी ने अपने हाथ से पांचों पर गोट लगाई।

फिर महारानी हिन्दुस्तान की दुखी स्त्रियों पर बहुत कृपा किया करती है। पन्ना की रानी बहुत दिन से बड़े रोग से बीमार पड़ी थी और तब किसी मेम साहिब की औषधि खाने से चंगी हो गई। रानी इस से बहुत आनन्दित हुई और जब वह मेम साहिब इङ्गलिस्तान को जाने लगी तब रानी ने उस की बिन्ती किई कि जब तुम स्वदेश में पहुंच जाओ तो महारानी विक्टोरिया के पास जाके उसे बता दीजिये कि हिन्दुस्तान की रोगी स्त्रियों को कितने बड़े दुःख होते हैं। मेम साहिब से विन्डसर राजभवन में महारानी की भेंट हुई और उस ने पन्ना की रानी को सलाम भेजा और यह भी कहा कि हिन्द देश की स्त्रियों को इस बात का संदेश देना कि हम उन सब की सहायता



महारानी और राजकुमारी बीट्रिस का नेटली के अस्पताल के लिये रजाई बनाके भेजना ।

करने चाहते हैं जो वहां के दुःखी और रोगी स्त्रियों के लिये सहायता का कोई उपाय कर रहे हैं ।

थोड़े दिन हुए लार्ड डफ्रिन हिन्दुस्तान में लार्ड साहिब होकर आया । जब लेडी डफ्रिन चलते समय महारानी की भेंट करने गई तब विक्टोरिया ने उस की बिन्ती किई कि जो कुछ हिन्द की स्त्रियों के लिये सहायता कर सको सो करना । इस बिन्ती से वही चंदा उत्पन्न हुआ जो लेडी डफ्रिन फन्ड नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिस से हिन्द की रोगी स्त्रियों के लिये बहुत से रोगशाले खुल गये और बहुत स्त्रियों को औषधिविद्या पढ़ाई जाती है जिस्से वे अपनी बेचारी बहिनों की सहायता करें । यह ऐसा धर्म्मकार्य्य है जिस में उचित है कि समस्त हितैषी लोग हाथ लगावें ।

फिर महारानी रोनेवालों के संग रोना जानती है । जहां कहीं अपने राज्य भर में सुनती है कि कोई भारी बिपत्ति पड़ी है तो वह भी बहुत शोक करती है । बार २ जब सुनती कि स्त्रियां बिधवा हो गईं तो उन बेचारियों पर दया करके उन पास कोई दिलासे का बचन भेजती है । बार २ जब किसी नगर में आग लग जाती और सैकड़ों लोग घररहित दुःख में पड़े हैं तब तार का संदेश भेजकर वह अपनी कृपा उन पर दिखाती है ।

छठवां गुण विक्टोरिया में यह है कि वह ईश्वर की बड़ी भक्तिन है । यह नहीं कि वह बरजोरी से प्रजा से ईश्वर की सेवा करवाती है परन्तु यह कि अपने मन में उस सृजनहार और पालनहार परमेश्वर को बड़े प्रेम से भजती है । पूर्वकाल में महाराजों का बिचार और था । वह सोचते थे कि हम को उचित है कि सकल प्रजा से अपने इष्ट देव की पूजा करावें । और यदि वे हमारी आज्ञानुसार उन की पूजा न करें तो उन्हें दण्ड देना चाहिये । यों सोचकर काबुलदेश के

एक बड़े महाराजा ने अपने देश में एक बड़ी सोने की मूर्त्ति बनवाई और आज्ञा दिई कि जो कोई उस के आगे सिर न नवावे सो आग की जलती हुई भट्टी में डाला जावे। हम के महाराजा यों सोचते थे और उन की आज्ञा से हजारों मसीही लोग जो उन की मूर्त्तों के। न पूजते थे घात किये गये। औरंगजेब महाराजा ने काशी के बड़े २ मंदिरों को ढहवाकर उन के पत्थरों से एक मसजिद बनवाई। टिप्पू सुलतान बहुत हिन्दुओं को पकड़के उन्हें बरजोरी से मुसलमान करवा देता था। परन्तु मसीही धर्म्म में लिखा है कि धर्म्म उसी को कहना चाहिये जो मन की प्रीति से हो। तो कोई लाचारी से मसीही नहीं बनाया जाता है बरन केवल वेही मसीही हैं जो तन और मन से मसीह को प्यार करते हैं। सो जब सन् १८५८ ईसवी में महारानी ने हिन्द देश का अधिकार अपने हाथों में ले लिया तब उस ने सब हिन्द निवासियों को अर्थात् रईसों और कङ्गालों को यह संदेश भेजा कि हम मसीही धर्म्म को सत्य और यथार्थ मानते हैं और ईश्वर का बड़ा धन्य मानते हैं कि उस ने त्राण का ऐसा उत्तम उपाय निकाला है जिस से हम को इतना दिलासा मिलता है तोभी हम यह नहीं चाहते कि कोई अपनी इच्छा बिना उस धर्म्म को माने। न यह हमारा काम है कि किसी के मन के बिचार पर किसी प्रकार का उपद्रव करें। हमारी इच्छा है और हमारे राज्य में यही व्यवस्था है कि कोई अपने धर्म्मकार्य्य और रीतों के कारण से सताया न जाय न बढ़ाया जाय। सब धर्म्मों के लोग हमारे राज्य में बराबर चैन और आराम से रहें और सभों की एक ही प्रकार की रक्षा होवे। और हम सब प्रधानों और अध्यक्षों को दृढ़ता से आज्ञा देते हैं कि कोई किसी को मत के कारण से दुःख न दे और यदि कोई दे तो मैं उस से अति अप्रसन्न हूंगी।

ऊपर की बातों में महारानी बचन देती है कि हमारी इच्छानुसार कोई अपने धर्म्म के कारण से दुःख न पावेगा न कोई अध्यक्ष को सन्तुष्ट करने के लिये अपने धर्म्म को बदल डाले। धर्म्म आत्मिक बात है और उसे सांसारिक बातों से मिलाना उचित नहीं है।

महारानी का बिश्वास ।

यदि कोई पूछे कि महारानी का धर्म्मबिश्वास क्या है तो उत्तर देना चाहिये कि वह एक ही परमेश्वर को स्वर्ग और पृथिवी के सृजनहार और पालनहार को मानती है और समझती कि वह परम पवित्र सर्वज्ञानी और सर्वसामर्थी है। वह मानती है कि हमें उचित है कि उस जन्मदाता अन्नदाता सुखदाता को जिस के दयावान हाथों से सब अच्छी बातें मिलती हैं मैं मानूं भजूं और प्यार करूं क्योंकि उसी से मैं जीती और राज्य करती हूं। उस की सारी व्यवस्थायें सत्य और न्याय और लाभदायक हैं। उस की व्यवस्थायें दो में संक्षेप किई जा सक्ती हैं। पहिली और बड़ी आज्ञा यह है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से प्यार कर। दूसरी आज्ञा यह है कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर।

महारानी यह नहीं सोचती है कि मैं ने उचित रीति से ईश्वर की आज्ञाओं को माना है परन्तु और लोगों से मिलकर यों उस के आगे स्वीकार करती है कि हे ईश्वर हम ने तेरी पवित्र आज्ञाओं को उल्लंघन किया। जो कुछ हमें करना था उस को हम ने नहीं किया। जो कुछ बर्जित था उस को हम कर रहे हैं और हम में भलाई पाई नहीं जाती है।

मसीही धर्म्म को छोड़ जितने और धर्म्म हैं उन सभों में यह बात पाई जाती है कि मनुष्य आप ही अपने सुकर्म्मों का प्रतिफल पावेगा और आप ही अपने कुकर्म्मों का दण्ड भोगेगा। मसीही धर्म्म में यह शिक्षा है कि जो कोई पापी अपने पापों के दण्ड को भोगता सो नरक को देखेगा क्योंकि उन पापों का बोझ इतना भारी है कि हम कभी उसे उठा नहीं सक्ते हैं और कि जो कुछ हम अपने सुकर्म्म समझते हैं सो ऐसे अशुद्ध हैं कि कभी निस्तार के काम में नहीं आ सक्ते हैं। सो मनुष्य के लिये एक मुक्तिदाता अवश्य है और ईश्वर ने अपनी बड़ी दया से अपने प्रिय पुत्र प्रभु यीशु मसीह को निस्तारक होने के लिये संसार में भेज दिया। मसीह का अवतार मनुष्य के त्राण करने के लिये था। हमारे पापों का दण्ड उठाके उस ने अपने को हमारी सन्ती में बलिदान कर दिया। वह मारा गया जिस्तें हम को अनन्त जीवन मिले। वह अपनी सामर्थ्य से फिर जी उठा जिस्तें अपने प्रिय चेलों को स्वर्गधाम में ग्रहण करे और उन्हें वहां सनातन लों सुख से बसावे। ईश्वर की पवित्र व्यवस्था को जिसे हम न मान सक्ते थे उस ने पूरी किई और अब वह सभों को मुक्ति दिया चाहता है जो पाप से पछताके और उसे मुक्तिदाता जानके उस पर विश्वास करते हैं।

महारानी एक गीत को बार २ गाया करती हैं जिस में उस का विश्वास स्पष्टरूप से प्रगट है। उस का अर्थ यह है कि मैं अपने पापों को स्वीकार करके जानती हूं कि मैं अपने किये से कभी इन को मिटा नहीं सक्ती हूं और चाहे मैं बहुत आंसू बहाऊं मैं इन को धोके शुद्ध नहीं कर सक्ती हूं। हे त्राणकारक यीशु मुझे बचा। मेरे पापों को धो। मेरे मन को पवित्र कर। अपने निष्कलंक पवित्रता का वस्त्र हमें पहिना दे और धर्म्मात्मा ऐसा मेरे दिल में बसे कि मैं पाप से घिन करूं।

हां मसीही धर्म्म सुकर्म्मों को बड़ी बात प्रगट करता है और वह जो सुकर्म्म करने से अचेत है ईश्वर का भक्त न समझा जायगा परन्तु यह निस्तार का मार्ग समझा नहीं जाता है। हम कभी अपने किये से अपना परलोक बना न सकेंगे। सुकर्म्म केवल वह प्रेम की सेवा है जिस से हम अपना प्यार ईश्वर की ओर प्रगट कर सक्ते हैं जैसा वह पुत्र जो अपने पिता को प्यार करता है सो सदा ऐसा काम किया चाहता है जिस से पिता प्रसन्न होवे वैसा ही जब हम मसीह के सत्य चेले हो जायें तब सदा ऐसे काम करने चाहिये जिन से मसीह प्रसन्न होता है अर्थात् दया के काम पवित्रता के काम और हित के काम। सो महारानी अपने कार्य्य पर नहीं बरन इस बात पर आसरा रखती है कि मसीह जीवन भर मेरा सहायक होगा और मैं मरने पर इस नाशमान मुकुट की सन्ती ईश्वर की दया से ऐसा मुकुट पाऊंगी जो कभी नाश न होवेगा।

शेष बचन।

बहुत कङ्गाल लोग प्रधानों और महाशयों की ईर्षा और द्वेष करते हैं। वे बिचार करते हैं कि बड़ों को पूरा सुख और हम को केवल दुःख मिलता है। परन्तु इस वृत्तान्त से जाना जाता है कि बड़े लोगों को भी कष्ट होता है। ऊपर बर्णन हुआ कि यद्यपि महारानी विक्टोरिया ऐसे न्याय और धर्म्म से राज्य करती है तौभी कई बार दुष्टों ने उसे घात करना चाहा। जैसा बहुत सी और स्त्रियों को पति और बालक के मरने से शोक होता है वैसा उस को भी हुआ है। ईश्वर की दया से उस को बहुत दिन से राज्य हुआ है तौभी वह दिन आनेवाला है जिस में उस को भी इस सब धूमधाम और राज्य और सांसारिक

ऐश्वर्य्य को छोड़ना पड़ेगा और यहां से कूच करना पड़ेगा । उस दिन उसे यों कहना होगा जैसा प्रिन्स आलबर्ट ने कहा कि यदि मेरा आसरा इस समय संसार की बातों पर होता तो अब मेरी क्या ही दुर्दशा होती ।

हां यह सांसारिक पद और बड़ाई जिस पर मनुष्य इतना फूलते हैं हमारे संग वहां न जायेगी । ऐसी बातें यहां ही रह जायेंगी । राजा और प्रजा ईश्वर के आगे एक समान खड़े होते हैं । जैसा उत्तम को तैसा अधम को जो तन मन से उस की सेवा करे वह महाबिचार के दिन में कहेगा धन्य है उत्तम और बिश्वास योग्य दास । तू अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर ।

चाहिये कि हम में से हर एक जिस २ पद में ईश्वर ने हमें रक्खा है उस ही में सन्तुष्ट रहे । उस ने जो सर्वज्ञानी है उस जगह को हमारे लिये अच्छी समझा सो हमारा यत्न सदा यही होवे कि ईश्वर के अनुग्रह से उसी जगह में चैन से रहें और उसी में शक्ति भर औरों की भलाई करें ।

जब सन् १८५८ ईसवी में विक्टोरिया ने हिन्द के राजा प्रजा को संदेश भेजा जैसा ऊपर वर्णित हुआ उस संदेश के अन्त में उस की यह प्रार्थना लिखी गई ।

हमारी बड़ी इच्छा यह है कि हिन्द के लोगों का परिश्रम बहुत बढ़े और कि उस परिश्रम से धन बहुत अधिक बढ़े और कि अधिक धन के मिलने से लोग सन्तुष्ट रहें । हम यह चाहते हैं कि राज्य कार्य्य इस रीति से किये जायें कि हर प्रकार से देश की उन्नति होवे और छोटे बड़े को चैन प्राप्त होवे और कि हिन्द में ऐसे बड़े काम किये जायें जैसे रेलवे नहर शिल्पशाले आदि जिस से प्रजा की बढ़ती हो जाये । प्रजा के सुख चैन में हमारी सामर्थ्य प्रजा की सन्तुष्टता में हमारी

रक्षा प्रजा के धन्य मानने में हमारे यत्नों का प्रतिफल है। और हमारी बिन्ती यह है कि वह जो सर्बसामर्थी ईश्वर है हम को और सब को जो हमारे नीचे अधिकार रखते हैं बल दे कि सभों की भलाई के लिये हमारी ऐसी हित की इच्छाओं को पूरा करते जायें।

इति ।

बिवाह और श्राद्ध के व्यय	अमर शिक्षक की कथा
दान धर्म्म अधर्म्म	छोटी सफ़ीर: की कथा
दास की उन्नति	दानिएल नबी की कथा
एक छोटी दासी की कथा	दाऊद महाबीर मारक
गाली देना	एक फ़ारसी महारानी
रोग कारण	जल से निकाला हुआ बालक
क्षयरोग	सरकारतुला
बिधवा और उस की बहू	उड़ाऊ पुत्र की कथा

पुस्तकें जो दो दो पैसे को बिकतीं ।

बिबिध देश की कहानियां	धर्म्म वर्णन संक्रान्त
धर्म्म मोती माला	गर्रा की कथा
इङ्गलिस्तान का वर्णन	ज्वालामुखी पर्वतों का वर्णन
कन्या हितैषिणी	कथामाला
कुमार शिक्षा	लघु कथाएं
नाशी रसना	पशु पूजा
पूर्वकाल के रूमियों का दृष्टान्त	साधारण लोक वृत्तान्त
सत्य अवतार का वर्णन	सुलेमान का दृष्टान्त
सर्प्पनामा	उपमा रत्नावली
वैद्य का वृत्तान्त	यूनस का वृत्तान्त

पुस्तकें जो तीन तीन पैसे को बिकतीं ।

वृत्तान्त वृन्द	ज्योतिष और ताराफलित विद्या
छोटी नटनी की कथा	हिन्दू कहानियां
मोदक कहानियां चित्र सहित	प्राचीनकाल के प्रसिद्ध बालक

पुस्तकें जो एक एक आने को बिकतीं ।

वर्णन बारी	देश चित्रमाला
बिद्रोह इतिहासक कहानियां	यीशु संकीर्तन
पूर्वकाल के यूनानियों का वृत्तान्त	अङ्गरेजों का गृहसंबन्धी वृत्तान्त

पुस्तकें जो दो दो आने को बिकतीं ।

पावल प्रेरित की कथा	चित्र और चरित्र स्त्रियों के लिये
हिन्दुस्तान देश के जन	कुलीन स्त्रीकीर्ति



[illegible] ।



और उस की पत्नी ।